अनोखी बातें

लेखक

सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४९

STRANGE THINGS
(*Hindi*)
by: Sunny David

2000 Copies. 1997

Church of Christ
P.O. Box 3815
New Delhi-110049

सत्य सुसमाचार

मसीह के सुसमाचार का कार्यक्रम रेडियो पर सुनिये

श्रीलंका से प्रत्येक :

गुरूवार रात को ९ से ९.१५ तक

रविवार रात को ८.४५ से ९.०० तक

वक्ता

सनी डेविड

प्रस्तुतकर्त्ता

मसीह की कलीसिया, नई दिल्ली

विषय-सूची

	पृष्ठ
१. अनोखी बातें	१
२. उद्धार पानेवालों के लिए क्रूस की कथा परमेश्वर की सामर्थ है	६
३. परमेश्वर की धार्मिकता	११
४. यीशु मसीह ही जगत का उद्धारकर्त्ता क्यों है ?	१६
५. मसीह ने कलीसिया को क्यों बनाया था ?	२१
६. स्वर्ग का राज्य क्या है ?	२६
७. सबको बपतिस्मा लेने की आज्ञा मसीह ने क्यों दी है ?	३१
८. मनुष्य क्या है ?	३६
९. सबने पाप किया है	४१
१०. क्रूस का प्रदर्शन	४६
११. आत्मिक दुर्घटना	५१
१२. बपतिस्मा और उद्धार	५६

अनोखी बातें

एक बार फिर से परमेश्वर के वचन की बातों को आपके सामने रखने का यह मौका मुझे मिला है। और इसके लिए मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। परमेश्वर के वचन की बातों से मेरा तात्पर्य उन बातों से है जिन बातों को परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल में लिखवाकर हमें दिया है। बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो; यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं हैं क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएँ दोनों मिटते जाते हैं। पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (१ यूहन्ना २:१५-१७)। लेकिन परमेश्वर की इच्छा पर चलने से पहले उसकी इच्छा को जानना आवश्यक है। यदि हम उसकी इच्छा को जानते ही नहीं हैं तो फिर हम उसकी इच्छा पर कैसे चल सकते हैं ? किन्तु परमेश्वर की इच्छा कहाँ है ? हम उसकी इच्छा को कैसे जान सकते हैं ? परमेश्वर की इच्छा को जानने का केवल एक ही उपाय है और वह है : **बाइबल**। बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। इस किताब में परमेश्वर ने मनुष्यों के द्वारा अपनी इच्छा को लिखवाकर मनुष्यों को दिया है। बाइबल किसी विशेष धर्म की पुस्तक नहीं है। पर यह किताब सब मनुष्यों के लिए परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। इसी पुस्तक के द्वारा परमेश्वर ने मनुष्यों को बताया है कि परमेश्वर कौन है और वह सब मनुष्यों से क्या चाहता है। यदि हम बाइबल को पढ़ेंगे या उसमें लिखी बातों को सुनेंगे तो हमें पता चलेगा कि उद्धार पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए। और हमें परमेश्वर की

आराधना किस तरह से करनी चाहिए। हमें कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिए। और स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा परमेश्वर के साथ रहने के लिए हमें क्या तैयारी करनी चाहिए।

पर अफ़सोस की बात यह है कि बहुतेरे ऐसे लोग भी हैं, जो परमेश्वर के वचन की बातों को तोड़-मरोड़ के और उसमें मिलावट करके या उसमें जोड़कर और घटाकर लोगों के सामने रखते हैं। ऐसा सदियों से होता चला आया है। और लोगों ने ऐसी-ऐसी बातों पर विश्वास करके ऐसी बातों को परमेश्वर का वचन भी मान लिया है। नतीजतन, आज संसार भर में आत्मिक दृष्टिकोण से एक बड़ा अंधकार छाया हुआ है। और यहाँ तक कि जो बातें परमेश्वर के वचन की पुस्तक में नहीं लिखी हुई हैं उन्हें तो लोग आज परमेश्वर का वचन करके मान रहे हैं। पर जो बातें परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी हुई हैं, उन्हें सुनकर वे कहते हैं, कि ये तो अनोखी बातें हैं। ठीक ऐसे ही जैसे कि आज से लगभग दो हज़ार साल पहले जब पौलुस ने यूनान के अथेने नगर में जाकर सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर का और यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था। तो सुननेवालों ने कहा था कि तू तो हमें अनोखी बातें बता रहा है। (प्रेरितों १७:२०)। वे सब लोग धार्मिक पृवर्त्ती के लोग थे, भजन गाकर स्तुति करनेवाले लोग थे। लेकिन वे परमेश्वर की आराधना, उपासना और स्तुति अज्ञानता के साथ कर रहे थे। क्योंकि वे सच्चाई को जानते ही नहीं थे। उन्हें किसी ने सच्चाई बताई ही नहीं थी। वे या तो अपने माता-पिता से सीखी धार्मिक बातों का पालन कर रहे थे या देखी और सुनी बातों पर चल रहे थे। जो दूसरे लोग कर रहे थे उन्हें देखकर वही बातें वे लोग भी कर रहे थे। जिन बातों को उन्होंने अपने माता-पिता को करते देखा था, धार्मिक दृष्टिकोण से, वही वे भी कर रहे थे। और क्योंकि सभी लोग वैसा ही कर रहे थे, तो उन्होंने उन बातों को सच्चाई के रूप में मान लिया था। पर जब वास्तव में उन्हें सच्चाई बताई गई जैसे

कि परमेश्वर के प्रेरित पौलुस ने उन्हें सच्ची बातें बताईं, तो उन बातों को सुनकर वे सब कहने लगे कि, "तू तो हम से अनोखी बातें कर रहा है।" क्या यही बात आज भी सच नहीं है ? सदियों से लोगों ने मनुष्यों के बनाए रीति-रिवाज़ों का पालन किया है। जहाँ से जो कुछ भी उन्होंने बाइबल के नाम से सुन लिया, उसी को सच्चाई मान लिया है। जो कुछ अपने माता-पिता को करते देखा, समझ लिया यही परमेश्वर की इच्छा और उसकी आज्ञाएँ हैं। क्या यह सच नहीं है ? कड़वी लगती हैं न सच्ची बात ? वह तो लगेगी !

इसी का एक उदाहरण हम इस बात में देखते हैं कि कुछ साल पहले कुछ लोगों ने वर्ष के एक महीने में एक तारीक निश्चित कर दी थी और लोगों से कहने लगे थे कि आज की तारीख में यीशु मसीह का जन्म हुआ था। बस कया था ! बन गया "बड़ा दिन !" लोग उसे "बड़ा दिन" करके मनाने लगे। और क्या कुछ नहीं होता उस "बड़े दिन" में ! मौज-मस्ती उड़ाई जाती है। और किस लिए ? क्योंकि वे कहते हैं, कि उस दिन परमेश्वर के पुत्र का जन्म हुआ था। पर क्यों हुआ था पृथ्वी पर परमेश्वर के पुत्र का जन्म ? वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। वह संसार के सब लोगों के लिए, उनके पापों के बदले में मरने के लिए आया था। पर लोग उस दिन को मनाने के लिए अपनी सांसारिक अभिलाषाओं को पूरा करते हैं ! क्या यही एक कारण नहीं हो सकता, कि क्यों परमेश्वर ने इस बात को मनुष्य से छिपाकर रखा कि कौन से दिन और कौन-सी तारीख को उसके मसीह का जन्म इस पृथ्वी पर हुआ था ? क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है। वह मनुष्य को अच्छी तरह से जानता है। उसे मालूम था कि लोग उस उद्धारकर्त्ता से और पृथ्वी पर उसके आने के मूल उद्देश्य से तो अपने ध्यानों को हटा लेंगे। पर उस दिन को जिस दिन वह पृथ्वी पर आया था, उस से भी अधिक महत्व देंगे। इसलिए परमेश्वर ने बाइबल में कही पर भी उस दिन के बारे में मनुष्यों को नहीं बताया है। यानि साल के कौन से दिन में

कौन-सी तारीख को यीशु मसीह का जन्म इस पृथ्वी पर हुआ था, इस बात का वर्णन बाइबल में कहीं पर भी नहीं किया गया है। लेकिन फिर भी लोगों ने अपनी तरफ़ से एक दिन नियुक्त कर ही दिया है; और आज विश्व में कौन नहीं जानता उस दिन के बारे में? लेकिन फिर भी आज जब लोगों को इस बारे में सच्चाई बताई जाती है, तो कौन इस बात पर विश्वास करता है ? वे कहते हैं, कि ये तो आप अनोखी बातें कर रहे हो !

ऐसे ही, कुछ वर्ष पूर्व, एक और नई शिक्षा का प्रचार किया गया था और वह धीरे-धीरे सब जगह फैल गई और आज उसे बाइबल की एक प्रमुख शिक्षा के रूप में सभी स्थानों पर बड़े सम्मान के साथ माना जा रहा है। और मनुष्यों की निर्धारित वह शिक्षा यह है कि जब एक छोटा बच्चा कुछ हफ़्तों का हो जाए तो उसके ऊपर पानी की बूंदें छिड़ककर उसे बपतिस्मा दिया जाए और जब वह बड़ा हो जाए तो उसका "दृढ़ीकरण" किया जाए। अब बात तो यह है कि बाइबल में कौन-सी जगह इस बात की आज्ञा दी गई है ? या कहां ऐसी शिक्षा लिखी हुई है ? या क्या कोई ऐसा उदाहरण हमें मिलता है ? बाइबल इस बारे में क्या कहती है ? बाइबल में क्या लिखा हुआ है ?

प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार छोटे मासूम बच्चों के लिए नहीं है पर वह बड़े लोगों के लिए है। क्योंकि बड़े लोगों में पाप करने की क्षमता है। वे पाप कर सकते हैं, और उन्हें पापों की क्षमा प्राप्त करके उद्धार पाने की आवश्यकता है। छोटे मासूम बच्चों को नहीं ! क्योंकि वे तो पाप कर ही नहीं सकते। इसीलिए प्रभु यीशु ने अपने चेलों को कहा था, कि यदि तुम मन फिराकर छोटे बच्चों के समान नहीं बनोगे, तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करने पाओगे। और उसने छोटे बच्चों के बारे में कहा था, कि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती १८ : ३; १९:१४)।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, जैसा कि मरकुस १६ : १६ में

लिखा है, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। प्रत्यक्ष ही है कि एक छोटा बच्चा विश्वास नहीं कर सकता, इसलिए वह बपतिस्मा भी नहीं ले सकता। प्रेरितों २ :३८ में लिखा है, कि तुममें से हर एक अपना-अपना मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा ले। अब एक छोटा बच्चा तो मन नहीं फिरा सकता। और न ही वह पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले सकता है। वास्तव में बाइबल की शिक्षानुसार, बपतिस्मा लेने का अर्थ है पानी के भीतर गाड़े जाना और उसमें से बाहर आना जैसे कि हम बाइबल में रोमियों की पुस्तक में ६ अध्याय में ३-५ पदों में पढ़ते हैं। बाइबल हमें यह सिखाती है, कि प्रत्येक व्यक्ति को उद्धार पाने के लिए यीशु मसीह में विश्वास लाना चाहिए और पाप से मन फिराकर, अर्थात पाप के लिए मरके, पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए। यानि जैसे यीशु मसीह हमारे उद्धार के लिए मारा गया था और गाड़ा गया था और जी उठा था, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति पाप के लिए मरके पानी की कब्र में गाड़ा जाए, अपने पुराने जीवन को दफ़नाने के लिए और फिर उसमें से बाहर निकलकर यीशु मसीह के आदर्शों पर चलकर एक नया जीवन बिताए। जो लोग ऐसा करते हैं, वे मसीह यीशु के अनुयायी बन जाते हैं, और मसीह उनको अपनी कलीसिया में, अर्थात् उद्धार पाए हुए अपने लोगों की मण्डली में मिला लेता है।

सो मित्रो, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, कि उसने अपनी इच्छा को लिखवाकर हमें दिया है। यानी उसने हमें बता दिया है कि वह हमसे क्या चाहता है। और यदि हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं, तो यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसकी आज्ञाओं का ठीक वैसे ही पालन करें जैसे कि वह चाहता है।

उद्धार पानेवालों के लिए क्रूस की कथा परमेश्वर की सामर्थ है

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता पाप से मुक्ति प्राप्त करके परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनना है। और परमेश्वर की शक्ति का सबसे बड़ा प्रमाण वह क्रूस है जिस पर उसका सामर्थी वचन एक मनुष्य के रूप में लटकाया गया था। उस क्रूस के ऊपर मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता का परमेश्वर की सबसे बड़ी सामर्थ से मेल हुआ था। इसीलिए, बाइबल में लिखा है, कि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिए तो मूर्खता है पर उन सब के लिए जो उद्धार पाएंगे परमेश्वर की सामर्थ है।

आज से दो हज़ार साल पहले जब क्रूस पर यीशु मसीह को लटकाया गया था, तो वह मनुष्यों की ताकत का दिखावा नहीं था, पर वह परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन था। क्योंकि जिसने मुर्दों को ज़िन्दा किया था, उसको कौन मार सकता था ? क्रूस के ऊपर परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह की मौत मनुष्यों के लिए बड़ी ही ज़रूरी थी। क्योंकि उसका खून मानवता के पापों के प्रायश्चित के लिए बहाया गया था। पाप से मनुष्य का उद्धार केवल परमेश्वर ही कर सकता है। और यीशु मसीह का क्रूस पर लटकाया जाना केवल परमेश्वर का ही काम था। क्या मनुष्यों को यह बात मूर्खता की बात नहीं लगती कि एक व्यक्ति के क्रूस पर मारे जाने से सारे जगत का उद्धार हो सकता है ? तौभी बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है ! (१ कुरिन्थियों १:१८-२५)।

जब हम मनुष्य के पाप से उद्धार पाने के विषय में विचार करते हैं, तो हमारा ध्यान इस बात पर जाता है, कि मनुष्य को

पाप से उद्धार की आवश्यकता तीन प्रकार से है। अर्थात् सबसे पहले तो मनुष्य को उन पापों से और बुराईयों से उद्धार पाने की ज़रूरत है जिन्हें उसने अपने होश सम्भालने के समय से अब तक किया है। और फिर उसे प्रतिदिन उद्धार अर्थात् पापों की क्षमा की आवश्यकता है। और अन्त में पृथ्वी पर के इस जीवन की समाप्ति के बाद, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाने के लिए उसे सम्पूर्ण उद्धार पाने की आवश्यकता है। और ऐसे ही उद्धार को मनुष्यों के लिए सम्भव करने के लिए परमेश्वर ने यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान किया था। सो इन बातों को ध्यान में रखकर सबसे पहले हम इस बात पर विचार करेंगे कि उन सब पापों से, जिन्हें मनुष्य ने अपने अब तक के जीवन में किया है, उसे किस समय, यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा, उद्धार मिलता है ?

बाइबल में, मनुष्य के उद्धार के लिए परमेश्वर के सुसमाचार के तीन तत्वों पर हमारा ध्यान दिलाया गया है। जो कि इस प्रकार हैं–कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिए "मारा" गया था और "गाड़ा" गया था, और "जी" उठा था। क्रूस पर मसीह की मृत्यु के बाद उसकी लाश को एक चट्टानी कब्र के भीतर गाड़ा गया था। पर मनुष्यों के द्वारा खोदी गई वह कब्र इतनी मज़बूत नहीं थी कि वह परमेश्वर के पुत्र को अपने भीतर रख पाती। सो, कब्र में गाड़े जाने के बाद तीसरे दिन यीशु फिर से जी उठा था। और यह अद्भुत काम भी उसी तरह से परमेश्वर की योजना के अनुसार हुआ था, जैसे कि क्रूस पर यीशु की मौत हुई थी। जी उठने के बाद, यीशु पूरे चालीस दिन तक पृथ्वी पर रहा था और अपने चेलों को समय-समय पर मिलता रहा था। लेकिन जिस दिन वह अन्तिम बार अपने चेलों से मिला था, इससे पहले कि वह स्वर्ग पर वापस उठाया जाता, उसने अपने चेलों को यह आज्ञा देकर सारे संसार में भेजा था कि सारे जगत में जाकर तुम मेरे सुसमाचार का प्रचार करो और लोगों को अनुयायी बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो, क्योंकि जो

कोई विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मत्ती २८:१८–२०; मरकुस १६:१५-१६)। सबसे पहली बार उसके चेलों ने जब उसके सुसमाचार का प्रचार किया था, तो बाइबल में लिखा है, कि सुननेवालों के मनों पर बड़ा गहरा प्रभाव हुआ था, और उन्होंने मसीह के चेलों से पूछा था, कि अब हम क्या करें ? अर्थात् हम सब इन बातों पर विश्वास करते हैं, पर अब हम क्या करें ? यीशु के चेलों ने उनसे कहा था, कि तुम में से हर एक अपना-अपना मन फिराए और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। बपतिस्मा लेने का अर्थ है, पानी के भीतर गाड़े जाना और उसमें से बाहर आना। यीशु मसीह हमारा उद्धार करने को मारा गया था और गाड़ा गया था, और जी उठा था। ऐसे ही मनुष्य पाप से मन फिराकर पाप के लिए मरता है। फिर वह पानी की कब्र में यीशु मसीह की आज्ञा मानकर एक मरे हुए व्यक्ति के समान अपने पापों की क्षमा पाने के लिए गाड़ा जाता है। और फिर उस पानी में से बाहर आकर वह एक नया इंसान बन जाता है। इस प्रकार, आत्मिक रूप से, उसका नया जन्म होता है। वह मसीह में एक नई सृष्टि बन जाता है। यानि अब तक के उसके सारे पाप क्षमा हो जाते हैं, और वह मसीह में होकर एक नया जीवन आरम्भ करता है। वह व्यक्ति एक मसीही अर्थात् मसीह का एक अनुयायी बन जाता है और मसीह उसे अपनी कलीसिया में यानि उद्धार पाए हुए अपने लोगों की मण्डली में मिला लेता है।

पर इसका अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति अब कोई पाप कर ही नहीं सकता। वह फिर पाप कर सकता है और मसीह से अलग होकर अपने उद्धार को खो भी सकता है। इसलिए उसे प्रतिदिन मसीह में रहते हुए भी, अपने पापों की क्षमा की आवश्यकता रहती है। बाइबल में लिखा है–"जो समाचार हमने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है, और उसमें कुछ भी

अंधकार नहीं। यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अंधकार में चलें तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें तो एक-दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। पर यदि हम कहें कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हममे सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।'' (यूहन्ना १:५-९)।

सो बपतिस्मा लेने के द्वारा पापों की क्षमा पा लेने के बाद एक मसीही व्यक्ति को चाहिए कि परमेश्वर के वचनानुसार उसके लोगों के साथ ज्योति में चले। और जान-बूझकर कोई पाप न करें। पर मनुष्य होने के कारण उससे प्रतिदिन भूल-चूक हो सकती है। सो इसलिए उसको चाहिए कि वह प्रतिदिन मसीह के सामने अपने पापों को मान ले। और ऐसा करने से मसीह में होने के कारण उसे प्रतिदिन अपने पापों की क्षमा मिलती रहेगी।

और इस तरह से वह इन्सान हर एक दिन परमेश्वर के पास जाने के लिए तैयार रहेगा। क्योंकि उसे इस बात का आश्वासन रहेगा कि उसने बपतिस्मा लेकर अपने पिछले सब पापों की क्षमा प्राप्त कर ली है और मसीह में अपना रोज़ाना का जीवन व्यतीत करके प्रतिदिन अपने पापों की क्षमा पा ली है। और तीसरे स्थान पर, अपने अन्तिम समय तक मसीह के प्रति विश्वासयोग्य रहकर अपने आपको परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए तैयार कर लिया है। प्रभु यीशु ने अपने अनुयायीओं से कहा था कि यदि तुम प्राण देने तक विश्वासी बने रहोगे तो मैं तुम्हें जीवन का मुकुट दूंगा। (प्रकाशितवाक्य २:१०)।

इन्हीं बातों के आधार पर प्रभु यीशु मसीह के एक अनुयायी ने, जिसका नाम पौलुस था, अपनी मृत्यु के समय इस प्रकार कहा

था, "क्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूँ और मेरे कूच का समय आ पहुँचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है जिसे प्रभु जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सबको भी, जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं।''

क्या आपके पास ऐसा आश्वासन है ? क्या आप पौलुस की तरह परमेश्वर से मिलने को तैयार हैं ? क्या आप जानते हैं कि आपने अपने पापों की क्षमा परमेश्वर की इच्छा को मानकर प्राप्त कर ली है ? जब पौलुस ने सबसे पहली बार परमेश्वर के सुसमाचार को सुना था, तो उससे कहा गया था कि तू अब क्यों देर करता है ? उठ बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। (प्रेरितों २२:१६)। और बाइबल में लिखा है कि उसने तुरन्त उठकर बपतिस्मा लिया था। (प्रेरितों ९:१८)। अर्थात उसने परमेश्वर की इच्छा का पालन एक दम किया था।

आज आत्मिक दृष्टिकोण से आप कहाँ हैं ? क्या आप उद्धार पाए हुए मसीह के लोगों की उस मंडली में हैं, जो मसीह की कलीसिया है ? या आप उसके बाहर हैं ?

परमेश्वर आपको ऐसी समझ दे, कि आप उसकी इच्छा को मानकर उसके वचनानुसार चलनेवाले बन जाएं। यदि इस सम्बन्ध में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं तो हमें अवश्य लिखकर बताएं।

परमेश्वर की धार्मिकता

हमारी भाषा में एक शब्द है, "धर्मी" अब इस शब्द से हम कया अनुमान लगाते हैं। अकसर लोग इस शब्द को किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए इस्तेमाल करते हैं जो पूजा-प्रार्थना करता है, या दान इत्यादि देता है। परन्तु वास्तव में "धर्मी" शब्द का अर्थ है, एक ऐसा मनुष्य जो बिल्कुल सिद्ध हो, और जिसमें कोई भी बुराई या पाप न हो। अब जहाँ तक मनुष्यों के देखने का प्रश्न है मनुष्य केवल किसी का बाहरी रूप देखकर ही अनुमान या अन्दाज़ा लगाता है। मनुष्य के भीतर क्या है, या इन्सान अन्दर से वास्तव में कैसा है, उसके मन में क्या है, इसका ज्ञान तो केवल परमेश्वर को ही है। और परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक बाइबल में मनुष्यों के बारे में इस प्रकार कहता है, "कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करनेवाला नहीं एक भी नहीं। उनका गला खुली हुई कब्र है, उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है। उनके होठों में सापों का विष है। और उनका मुँह श्राप और कड़वाहट से भरा है। उनके पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। उनके मार्गों में नाश और क्लेश है। उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना उनकी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं।" (रोमियों ३:१०-१८)।

मनुष्य किसी को "अच्छाई" और भलाई के काम करते देखकर उसे "धर्मी" समझ सकता है। या किसी को "सफ़ेद" या "गेरूए" चोगे पहने देखकर उसे "धर्मी" मान सकता है। लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में, जो बाहर से नहीं परन्तु भीतर से मनुष्य को देखता और जानता है, हरएक इन्सान पाप के वश में है और पापी है और यह बिलकुल सच है। क्योंकि कौन-सा ऐसा मनुष्य है जिसने कभी

भी अपने मन में बुराई न सोची हो ? प्रभु यीशु मसीह ने एक बार शिक्षा देकर कहा था, कि ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो बाहर से मनुष्य के भीतर प्रवेश करके उसे अशुद्ध करे, परन्तु जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं वही उसे अशुद्ध करती हैं। क्योंकि जो वस्तुएँ बाहर से मनुष्य के भीतर जाती हैं, वे उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती हैं, और संडास में निकल जाती हैं। परन्तु जो मनुष्य के भीतर से निकलता है वही उसे अशुद्ध करता है। क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन में से बुरे-बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान और मूर्खता इत्यादि निकलते हैं। ये सब बातें, यीशु ने कहा था, मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, और ये ही मनुष्य को अशुद्ध करतीं हैं। (मरकुस ७:१५-२३) सो जब हम मन के दृष्टिकोण से देखते हैं तो हमें यह मानना ही पड़ता है कि पृथ्वी पर हर एक इन्सान पापी और अधर्मी है।

अब जबकि हर एक मनुष्य अधर्मी है, तो क्या मनुष्य अपने आप को धर्मी बना सकता है ? वास्तव में यह असम्भव बात है। मनुष्य अपने पापों को धोने और अपने आपको शुद्ध करने के लिए अपने "अच्छाई" और "भलाई" के कामों को साबुन या डिटर्जन पाउडर की तरह इस्तेमाल में नहीं ला सकता। मनुष्य जब भी कोई पाप करता है, तो वह पाप वह परमेश्वर के विरुद्ध करता है। इसलिए केवल परमेश्वर ही मनुष्य को पाप से मुक्ति दिला सकता है। केवल वही मनुष्य के पाप क्षमा करके उसे धर्मी अर्थात पाप-मुक्त बना सकता है। और पाप से उद्धार या छुटकारा प्राप्त करना भी मनुष्य के लिए बड़ा ही ज़रूरी है। क्योंकि पाप के रहते मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। और यदि मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा तो वह नरक में जाएगा। मनुष्य का अस्तित्व अमर है। अर्थात् हमारे अस्तित्व को संसार की कोई भी शक्ति नाश नहीं कर सकती क्योंकि मनुष्य परमेश्वर का अमर आत्मिक स्वरूप है। पृथ्वी पर मनुष्य कुछ समय के

लिए ही आता है। और एक यात्री की तरह वह यहाँ से हमेशा के लिए चला जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं की प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर का वंश है किन्तु प्रत्येक मनुष्य अपने ही पाप और अधर्म के कामों के कारण परमेश्वर से अलग है। लेकिन परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है, क्योंकि मनुष्य उसका वंश है। परमेश्वर हर एक कीमत पर मनुष्य को नरक में जाने से बचाना चाहता है। परन्तु पाप मनुष्य को परमेश्वर के पास जाने से रोकता है। अब यदि परमेश्वर मनुष्य के पाप को नज़र-अंदाज़ करके यानि उस पर कोई ध्यान दिये बिना मनुष्य को अपने पास बुला ले, तो यह अनहोना है। क्योंकि परमेश्वर धर्मी है और जहाँ पाप है वह वहाँ रह ही नहीं सकता। सो इससे यह आवश्यक हो जाता है कि इससे पहले कि मनुष्य परमेश्वर के पास जाकर रहे वह अपने पापों से छुटकारा पा ले अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर ले, और धर्मी बनकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन जाए।

सो अब हम किस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं ? हम यह देखते हैं कि परमेश्वर का प्रेम मनुष्य को पाप के कारण नरक में जाते देख नहीं सकता और उसकी धार्मिकता अधर्म के साथ रह नहीं सकती। और उसका न्याय कहता है कि पाप का दण्ड मनुष्य को अवश्य दिया जाए। इस महान कार्य को परमेश्वर ने किस तरह से पूरा किया, अब मैं आपका ध्यान इसी बात पर दिलाना चाहूँगा। बाइबल में रोमियों की पुस्तक के तीसरे अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि "हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के आधीन हैं, इसलिए कि हर एक मुँह बन्द किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है। पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रकट हुई है। जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यवक्ता देते हैं। अर्थात् परमेश्वर की वह

धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिए है, क्योंकि कुछ भेद नहीं। इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है सेत-मेत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की। उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रकट करे। वरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रकट हो, कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।'' (रोमियों ३:१९-२६)।

सो हम यह देखते हैं कि जिस काम को इंसान कर ही नहीं सकता था उसी काम को परमेश्वर ने बड़े ही अनोखे ढंग से कर दिखाया। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे'' बाइबल में लिखा है, "तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर ने अपने प्रेम की भलाई को हम सब पर इस तरह से प्रदर्शित किया है कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरा।'' (रोमियों ५:६-८)।

अपने प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए परमेश्वर ने अपने सामर्थी वचन को एक मनुष्य अर्थात् यीशु मसीह के रूप में संसार में भेज दिया था। और अपनी धार्मिकता को परमेश्वर ने इस काम से पूरा करके दिखाया कि उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया। और अपने न्याय की मांग को परमेश्वर ने यीशु में पाप को दण्डित करके पूरा किया। उसने यीशु को सारे जगत के पापों के लिए दोषी मानकर उसे संसार के सब पापों के लिए दण्ड दिया। बाइबल इस बात को हमें यह कहकर

समझाती है कि परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया। किन्तु जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।

इस बात को ध्यान में रखकर हमें प्रभु यीशु के वे शब्द याद आते हैं जो उसने पृथ्वी पर रहते कहे थे, कि "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" (यूहन्ना १४:६)।

परमेश्वर की पुस्तक पवित्र बाइबल का यह पैग़ाम है कि उसके पुत्र यीशु मसीह के भीतर होकर कोई भी इन्सान परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन सकता है और इस प्रकार स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकता है। यीशु मसीह में विश्वास लाकर और हरएक बुराई से अपना मन फिराकर और अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर कोई भी मनुष्य यीशु मसीह के भीतर आ सकता है। और फिर उसमें अपना जीवन व्यतीत करके परमेश्वर के स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाने की आशा रख सकता है। और मेरी आशा है कि आप परमेश्वर की बातों पर ध्यान करके उसके सुसमाचार को मानेंगे।

यीशु मसीह ही जगत का उद्धारकर्त्ता क्यों है ?

सत्य सुसमाचार के इस प्रोग्राम के सुननेवाले हमारे श्रोता इस बात से भली भांति परिचित हैं कि इस कार्यक्रम में हम लोगों का ध्यान मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता पर दिलाते हैं। और साथ में हम यह भी बताते हैं, कि मनुष्य की यह महत्वपूर्ण आवश्यकता किस तरह से पुरी हो सकती है। शारीरिक दृष्टिकोण से यह कहा जाता है, कि हर एक इंसान की तीन बड़ी ही खास ज़रूरते हैं, यानी, रोटी, कपड़ा और मकान। और यह भी सच है कि अकसर सभी लोग इन्ही आवश्यकताओं को पूरा करने में अपना सारा जीवन लगा देते हैं। पर हम आपका ध्यान मनुष्य की आत्मिक आवश्यकता की तरफ़ दिलाते हैं। क्योंकि हमारा विश्वास है कि शरीर तो नाशमान है, पर मनुष्य की आत्मा अविनाशी है। शारीरिक दृष्टिकोण से तो हरएक इंसान एक न एक दिन अवश्य मरेगा। लेकिन आत्मिक दृष्टिकोण से हरएक इंसान हमेशा ज़िन्दा रहेगा। क्योंकि आत्मा के अस्तित्व को कोई नहीं मिटा सकता। और हम सब आत्मिक प्राणी हैं। जिस तरह हमारा शरीर ज़िंदा है, वैसे ही हमारी आत्मा भी ज़िंदा है। क्योंकि यह दोनों ही व्यक्तित्व हमने परमेश्वर से पाए हैं। और उसी परमेश्वर ने हमें यह भी बताया है कि मनुष्य का शरीर तो एक न एक दिन अवश्य ही मिट्टी में मिल जाएगा। पर आत्मा हमेशा विद्यमान रहेगी। परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास, जिसने उसे दिया, लौट जाएगी। (सभोपदेशक १२:७)।

हम इस प्रोग्राम में परमेश्वर की बाइबल से आपको यह बताते हैं, कि पाप के कारण हरएक इन्सान परमेश्वर से अलग है। और

यदि मनुष्य अपने पाप से छुटकारा प्राप्त नहीं कर लेगा तो वह परमेश्वर से हमेशा अलग रहेगा। हम सब परमेश्वर के बनाए हुए लोग हैं। और परमेश्वर को हमारी चिन्ता है। वह हमें पाप के कारण नरक में नहीं जाने देना चाहता। और इसलिये मनुष्यों को पाप से छुटकारा देने के लिये उसने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक उद्धारकर्त्ता को भेजा है। परमेश्वर के उस उद्धारकर्त्ता का नाम है: यीशु मसीह। बाइबल में एक स्थान पर इस प्रकार लिखा है, कि, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४:१२)। यह बात बाइबल कहती है, कि उद्धार केवल मसीह यीशु में ही है। इसमें कोई खास कारण होना चाहिए। और वास्तव में इस बात का एक कारण यह है, कि यीशु मसीह को परमेवश्र ने, क्रूस पर जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान करके उसे सारे संसार के सब लोगों के लिये उद्धारकर्त्ता ठहराया है।

मेरा विश्वास है कि आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं। और अगर आप परमेश्वर में विश्वास नहीं करते, तो आपको निश्चय ही यह विश्वास करना चाहिए कि एक परमेश्वर है। क्योंकि आकाश और पृथ्वी और सारी सृष्टि इस बात का प्रमाण है, कि एक सृष्टिकर्त्ता है, जिसने इस अद्‌भुत संसार की रचना की है। बाइबल में लिखा है, कि, "मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि कोई परमेश्वर है ही नहीं।" क्योंकि, "आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है, और आकाशमंडल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।" (भजन १४:१; १९:१)। हम परमेश्वर के अस्तित्व का इन्कार नहीं कर सकते। क्योंकि उसके होने के प्रमाण ऐसे ठोस और इतने अनगिनत हैं कि उन्हें झुठलाया नहीं जा सकता। हम शारीरिक हैं, और परमेश्वर आत्मा है, इसलिये हम परमेश्वर को प्रत्यक्ष नहीं देख सकते। पर इसका मतलब यह नहीं है, कि कोई परमेश्वर है ही नहीं। मैं आप के दिमाग को नहीं देख सकता। पर आप के द्वारा किए गए कामों

को देखकर मुझे यह मानना पड़ता है कि आपके पास दिमाग है। ऐसे ही परमेश्वर के अद्भुत और अजीब, और बेमिसाल कामों को देखकर हमें यह कहना और मानना पड़ता है, कि न केवल परमेवश्र है ही, पर वह सर्वशक्तिमान, महिमायुक्त, और महान परमेश्वर है।

सो जबकि हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं। तो मेरा यह भी विश्वास है कि हम सब यह भी मानते हैं कि परमेश्वर पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य से प्रेम रखता है। और इसी के साथ, हमें यह भी मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य पापी है। और हर एक इन्सान को पाप से मुक्ति या उद्धार पाने की आवश्यकता है। क्योंकि यदि मनुष्य अपने पापों से उद्धार नहीं पाएगा तो वह पृथ्वी पर के अपने जीवन के बाद स्वर्ग में नहीं जाएगा। और यदि मनुष्य स्वर्ग में नहीं जाएगा तो वह नरक में जाएगा।

अब, क्या आप ऐसा सोच सकते हैं, कि वह परमेश्वर जो सर्वशक्तिमान है, जिसने मनुष्य को बनाया है, और जो मनुष्य से प्रेम करता है, यह जानते हुए कि मनुष्य पाप के कारण स्वर्ग में न प्रवेश करके नरक में जाएगा; क्या वह मनुष्य को पाप से छुटकारा पाकर स्वर्ग में प्रवेश करने का कोई रास्ता नहीं बताएगा ? क्या वह मनुष्य की इस विशाल समस्या का कोई साधारण हल नहीं जुटाएगा ? यदि आप अपने बच्चों से प्रेम करते हैं ; यदि आप अपने मित्रों और सम्बन्धियों से प्रेम करते हैं; तो क्या समस्याओं के समय; बीमारी और आवश्यकता के समय आप उन से अपना मुँह फेर लेंगे ? बिलकुल नहीं ! बल्कि वास्तव में, यदि आप उन से सचमुच में प्रेम करते हैं, तो ऐसे समय में आप अपना सब कुछ उन की सहायता के लिये दांव पर लगा देंगे। तो क्या परमेश्वर, जो हमारा स्वर्गिय पिता है, जिस ने हमें बनाया है, जिसने हमें जीवन दिया है, क्या वह हमें नरक में हमेशा की मौत मरने के लिये छोड़ देगा ?

ज़रा सोचिये, इस बात के ऊपर ! और फिर इस बात पर

विचार करें, कि हमारे स्वर्गीय पिता ने हमें नरक में जाने से बचाने के लिये हमारे लिये क्या किया है ? इस बारे में केवल एक ही बात, जिसे मैं जानता हूँ और जिसे मैं आप के सामने रख रहा हूँ, यह है, कि हमारे स्वर्गिय पिता ने यीशु मसीह में होकर, पृथ्वी पर आकर, हमारे सब पापों को अपने ऊपर ले लिया; और क्रूस पर चढ़कर जगत के सारे पापों का, स्वयं अपनी मृत्यु के द्वारा, प्रयश्चित किया ! हां, उसे तो रोमियों और यहूदियों ने क्रूस पर चढ़ाया था। पर वास्तव में यह परमेश्वर ने होने दिया था, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए! परमेश्वर ने मनुष्यों के उद्धार की योजना को पुरा करने के लिये उन यहूदियों और रोमियों को इस्तेमाल किया था। वे उस रोज़ केवल परमेश्वर की एक अद्भुत योजना को पूरा कर रहे थे। यीशु ने उस समय सच कहा था, जब वे लोग उस निर्दोष को क्रूस पर चढ़ा रहे थे कि वे जानते नहीं थे कि वे क्या कर रहें थे ! वे तो वास्तव में मनुष्यों के लिये परमेश्वर के उद्धार की योजना को पूरा कर रहे थे। पीलातुस ने यीशु के खून के प्यासे यहूदियों से यह सच कहा था, कि "मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता।" पर उसमें कोई भी दोष न होते हुए भी परमेश्वर ने उसे दोषी ठहरा दिया था। क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु परमेश्वर द्वारा जगत के सारे पापों के लिये दोषी ठहराया जा चुका था। वह इसलिये दोषी ठहराया गया था, ताकि हम उस में होकर परमेश्वर के लेखे में निर्दोष हो जाएं।

परमेश्वर के ऐसे अद्भुत और अनोखे प्रेम की मिसाल क्या कहीं और, किसी किताब में या किसी शास्त्र में मिलती है ? क्या परमेश्वर ने कोई और ऐसा मार्ग ठहराया है जिस पर चलकर हम सब इंसान अपने अपने पापों से मुक्ति पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाएं ? क्या मसीह यीशु के अलावा कभी किसी ने यह दावा किया है, कि जिसने मुझे देखा है, उसने परमेश्वर को देखा है; और मैं और मेरा पिता एक हैं ? और मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई मनुष्य पिता के पास नहीं पहुँच सकता ?

परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर एक ही है; और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में केवल एक ही बिचवई है अर्थात मसीह यीशु, जिसने अपने आप को सबके छुटकारे के दाम में दे दिया। (१ तिमुथियुस २:५,६)।

सो मैं आपसे अनुरोध करके कहूँगा, कि आप यीशु मसीह में विश्वास लाएं; और प्रत्येक अन्य बात से अपना मन फिराएं; और यीशु की आज्ञा मानकर अपने सब पापों की क्षमा पाने के लिये जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लें। ऐसा करने पर परमेश्वर आपके सब पापों को, यीशु के कारण, क्षमा करेगा, और आपको एक नया जीवन देगा। और मेरी आशा है, कि आप परमेश्वर के इस वरदान को अस्वीकार नहीं करेंगे। क्या इस बारे में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं ? हमें अवश्य लिखकर बताएं।

मसीह ने कलीसिया को क्यों बनाया था ?

आज मैं आप के सामने इस बात को रखना चाहता हूँ, कि मसीह ने कलीसिया को क्यों बनाया था ? प्रभु यीशु मसीह, जिसका सुसमाचार इस प्रोग्राम में मैं आपको बार–बार सुनाता हूँ, वह पृथ्वी पर आने से पहले स्वर्ग में परमेश्वर का वचन, परमेश्वर के साथ, परमेश्वर था। स्वर्ग से पृथ्वी पर वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। और इससे पहले कि वह समय आता, कि वह क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा मानवता के पापों का प्रयश्चित करता; उसने पृथ्वी पर मनुष्यों के सामने बड़े–बड़े आश्चर्यपूर्ण काम किये थे, ताकि उन्हें यह विश्वास हो जाए कि वह कोई मात्र मनुष्य नहीं पर सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है। प्रभु यीशु ने अपने विश्वास करनेवालों से बड़े–बड़े वादे किये थे, और महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाएं की थीं। और एक बड़ी ही महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा मसीह ने यह की थी, कि अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा। अपने एक चेले से, जिसका नाम पतरस था, यीशु ने कहा था, कि मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल नहीं होंगे। यानि अधोलोक भी मुझे मेरी कलीसिया बनाने से नहीं रोक सकेगा। यह कहकर यीशु ने इस बात की तरफ इशारा किया था, कि अपनी जिस कलीसिया को वह बनाएगा, उसे वह अपनी मौत के बाद ही बनाएगा। क्योंकि उसने कहा था, कि अधोलोक, यानि आधा–लोक, अर्थात वह स्थान जहाँ मरने के बाद मनुष्यों की आत्माएँ जाती हैं; इस से पहले कि न्याय का दिन आए और सब मुर्दे जी उठकर अपने–अपने कामों के अनुसार अपना–अपना प्रतिफल पाएं, और स्वर्ग या नरक में प्रवेश करें। यीशु भी सभी मनुष्यों की तरह मराणोपरान्त अधोलोक में गया

था। यानि उसकी आत्मा ने उसकी मृत्यु के बाद अधोलोक से प्रवेश किया था। और परमेश्वर ने उसकी देह को अपनी सामर्थ से फिर से ज़िन्दा कर दिया था, और यीशु अधोलोक में से निकलकर अपनी देह को पहनकर फिर से लोगों के बीच में आ गया था। इसके बाद यीशु फिर कभी नहीं मरा था। पर चालिस दिनों तक ज़मीन पर रहने के बाद, वह अपने चेलों के देखते–देखते, स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया था।

लेकिन इससे पहले, कि यीशु स्वर्ग पर वापस उठाया जाता, उसने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा था कि तुम सारी पृथ्वी पर सब लोगों के बीच में सब स्थानों पर जाकर लोगों से कहना कि वे मसीह में विश्वास करें, और पाप से अपना मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा के लिये पिता, पुत्र, और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा लें; क्योंकि मसीह ने कूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित कर दिया है। (मत्ति २८: १८–२०; मरकुस १६: १४–१६; लूका २४: ४४–४९)। और ऐसे ही हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि जब उसके चेलों ने परमेश्वर के पवित्रात्मा से भरकर सब लोगों के बीच में मसीह की मौत और उसके जी उठने के सुसमाचार को प्रचार करना आरम्भ किया था तो जिन लोगों ने विश्वास किया था उन से यीशु के चेलों ने कहा था : कि तुम में से हर एक अपना–अपना मन फिराकर और अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे। विश्वास लोगों को यीशु मसीह में और उस की प्रयश्चित–रूपी मृत्यु में करना था; और मन लोगों को सब प्रकार की बुराई तथा अन्धविश्वास से फिराना था; और बपतिस्मा लेने के द्वारा उन्हें अपने पुराने मनुष्यत्व या व्यक्तित्व को पानी की कब्र के भीतर एक मुर्दे के समान गाड़ना था, ताकि उस जल की समाधी में से बाहर आकर वह एक नया और मसीही जीवन व्यतित करने लगें। पवित्रात्मा का दान पापों से वह छुटकारा और उद्धार था जो उन्हें मसीह में विश्वास लाने और उसकी आज्ञा का

पालन करने से मिला था।

सो हम यह सीखते हैं, कि बाइबल की शिक्षानुसार, जब लोगों ने मसीह में विश्वास किया था और अपना–अपना मन फिराकर जल में बपतिस्मा लिया था, तो उन्हें पापों से छुटकारा, अर्थात उद्धार मिला था। लेकिन मसीह की उस कलीसिया का क्या हुआ जिसे बनाने की प्रतिज्ञा करके यीशु मसीह ने कहा था : कि अधोलोक के फाटक भी उसे अपनी कलीसिया बनाने से नहीं रोक सकेंगे ? बाइबल हमें बताती है, कि जिस समय लोगों ने मसीह में विश्वास किया था और अपना–अपना मन फिराकर बपतिस्मा लिया था, तो उसी समय मसीह ने उन सब का उद्धार करके उन्हे अपनी कलीसिया में मिला लिया था। और बाइबल कहती है, कि जो लोग उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर जहाँ कहीं भी उद्धार पाते हैं, मसीह उनको प्रतिदिन अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों २:३७,३८, ४१,४७)।

मसीह की कलीसिया मसीह की मंडली है। मसीह की कलीसिया उन सब लोगों की एक जमायत या मन्डली या देह है जिन्होंने मसीह के द्वारा अपने–अपने पापों से छुटकारा प्राप्त किया है। कलीसिया मसीह के उद्धार पाए हुए लोगों की एक आत्मिक देह है। बाइबल कहती है कि मसीह स्वयं उसका सिर है। (इफ़िसियों १:२२, २३; कुलुसियों १:१८)। कलीसिया को ही अंग्रेज़ी भाषा में "चर्च" कहा गया है, और कुछ लोग उसे गलती से "गिरजा" भी कहते हैं। बाइबल में कलीसिया को किसी इमारत या बिल्डिन्ग या भवन की तरह नहीं प्रस्तुत किया गया है। लेकिन बाइबल बार–बार कहती है कि मसीह की कलीसिया मसीह के अनुयायियों की एक मंडली है। बाइबल के अनुसार, कलीसिया केवल एक ही है। और मसीह की उस एक कलीसिया की अनेकों मन्डलियों को, जो अलग–अलग स्थानों पर पाई जाती हैं, बाइबल में मसीह की कलीसियाएं कहा गया है। मसीह की कलीसिया कोई सम्प्रदाय या "डिनोमिनेशन" नहीं है। मसीह की

कलीसिया का संचालन कोई मनुष्य या मनुष्यों का बनाया हुआ "हेडक्वार्टर" नहीं करता है। मसीह की कलीसिया मनुष्यों के बनाए रीति-रिवाज़ों या त्योहारों को नहीं मानती। मसीह की कलीसिया मनुष्यों के बनाए हुए नियमों या अकीदों के अनुसार नहीं चलती। केवल मसीह अपनी कलीसिया का सिर है, और केवल उसी के आदेशों का पालन उसकी कलीसिया हर एक जगह पर करती है।

लेकिन, मसीह ने अपनी कलीसिया को क्यों बनाया था? जैसा कि हमने देखा था, कि जो लोग मसीह में विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, मसीह उन्हें अपनी मन्डली में यानी अपनी कलीसिया में मिला लेता है। मसीह अपने उद्धार पाए हुए लोगों को आम लोंगों से अलग रखना चाहता है। वे संसार में तो रहते हैं, लेकिन वे संसार के नहीं हैं। मसीह की कलीसिया में वे लोग एक खास लोग बन जाते हैं। और बाइबल में मसीही जनों के बारे में यूं लिखा है, कि, "तुम एक चुना हुआ वंश, और राजपदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो।" (१ पतरस २:९)। मसीह की कलीसिया में लोग संसार की अंधकारपूर्ण बातों से छुटकारा प्राप्त करके आते हैं। इसलिये, जब वे मसीह में विश्वास करते हैं तो बपतिस्मा लेने से पहले वे अपना मन फिराते हैं। मसीह की कलीसिया में वे लोग मसीह के आदेशों पर चलकर एक नया जीवन व्यतित करते हैं। एक ऐसा जीवन जिस के द्वारा परमेश्वर के गुण प्रकट होते हैं। "तुम इसी के लिये बुलाये भी गए हो" बाइबल में लिखा है, "क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया हैं, कि तुम उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उस के मूँह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए कूस पर

चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं'' (१ पतरस २:२१–२४)।

चर्च, अर्थात् कलीसिया, परमेश्वर के चुने हुए लोगों का समाज है। कलीसिया संसार के अंधकार में से परमेश्वर की ज्योति में बुलाए गए लोगों की एक विशाल मंडली है। मसीह की कलीसिया में वे लोग हैं जो अपना जीवन धार्मिकता के लिये व्यतित करते हैं। वे अपने जीवनों से परमेश्वर के गुण प्रकट करते हैं। वे संसार के गंदे कामों में शरीक नहीं होते। वे शराब नहीं पीते; जुआ नहीं खेलते; किसी भी तरह का नशा नहीं करते। मार-पीट नहीं करते; गाली नहीं देते; गन्दी बातें नहीं बोलते। वे ऐसा जीवन व्यतित करने का प्रयत्न करते हैं जैसा मसीह का था। इसलिये वे मसीह के नाम से, अर्थात् मसीही कहलाते हैं। और एक बड़ी ही सुन्दर बात यह है, कि संसार में कहीं पर भी, कोई भी व्यक्ति मसीह की कलीसिया का सदस्य बन सकता है। जी हाँ, आप भी बन सकते हैं। चाहे आप किसी भी जाति या धर्म के हों, चाहे आप किसी भी "डिनोमिनेशन'' या सम्प्रदाय में हों–अपना मन फिराकर और मसीह की आज्ञा को मानकर, आप एक मसीही और मसीह की कलीसिया के सदस्य बन सकते हैं।

क्या इस बारे में आप और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं ? हमें अवश्य लिखिए।

स्वर्ग का राज्य क्या है ?

बाइबल में, और विशेषकर बाइबल के नए नियम में बार–बार हमारा ध्यान परमेश्वर के अर्थात स्वर्ग के राज्य पर दिलाया गया है। और आज हम इसी विषय पर विचार करेंगे। वास्तव में, परमेश्वर का राज्य और स्वर्ग का राज्य एक ही चीज़ है। क्योंकि स्वर्ग वह स्थान है, जहां परमेश्वर है। स्वर्ग एक आत्मिक स्थान है। और परमेश्वर आत्मा है। स्वर्ग एक ऐसा आत्मिक स्थान है। जिसमें कोई भी अपवित्र वस्तु कदापि प्रवेश नहीं कर सकती। अर्थात स्वर्ग पवित्र आत्माओं के रहने का स्थान है। स्वर्ग में परमेश्वर है, और उसके स्वर्गदूत हैं, और परमेश्वर चाहता है, कि मृत्यु के द्वारा शरीर को छोड़कर प्रत्येक मनुष्य की आत्मा भी स्वर्ग में प्रवेश करे। और परमेश्वर की इस प्रबल इच्छा का प्रमाण हमें इस बात में मिलता है, कि उसने अपने पवित्र वचन को स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था। और उसे जगत के सारे पापों के लिये दोषी ठहराया था। यद्यपि कि उसमें कोई भी पाप नहीं था और सारा का सारा संसार पाप के अंधकार में डूबा हुआ था। तौभी परमेश्वर ने हम मनुष्यों से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपने पवित्र वचन को एक मनुष्य के रूप में भेजकर, उसे मनुष्यों के हाथों से दन्ड दिलवाया, ताकि उसमें होकर, उसके द्वारा हम अपने पापों से मुक्त हो जाएं, और उसमें धर्मी बन जाएं; ताकि जब हम इस संसार को छोड़कर यहाँ से हमेशा के लिये जाएं, तो उसके द्वारा पवित्र माने जाकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश पाएं।

स्वर्ग को बाइबल में, स्वर्ग का राज्य और परमेश्वर का राज्य कहकर इसलिये सम्बोधित किया गया है, क्योंकि वहाँ सब कुछ केवल परमेश्वर के ही अधिकार से होता है। परमेश्वर वहाँ राजा के समान है, और उसके सब पवित्र लोग, जो उसके पुत्र यीशु मसीह के लोहू के द्वारा पवित्र किए गए हैं, वहाँ उसकी प्रजा होंगे। वहाँ वे लोग

केवल उसी की इच्छानुसार चलेंगे, जो उनके लिये परमेश्वर का संविधान होगा। उस स्वर्गीय राज्य की सीमाओं में कोई भी अपवित्र वस्तु प्रवेश नहीं कर सकेगी। परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य की सुन्दरता और विशालता का वर्णन बाइबल में इन शब्दों में किया गया है, कि वह नगर चोखे सोने जैसा और स्वच्छ कांच के समान होगा; जिसकी नेवें हर तरह के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई होंगी। सूरज और चांद और सितारों का तो वहाँ प्रयोजन ही नहीं होगा, क्योंकि रात तो कभी वहाँ होगी ही नहीं–क्योंकि परमेश्वर के तेज का प्रकाश वहाँ हर समय फैला रहेगा। परमेश्वर के लोग वहाँ हमेशा उसके साथ रहेंगें; कोई दुख–दर्द वहाँ नहीं होगा। शोक–विलाप और मृत्यु जैसी चीज़ें वहाँ नहीं होंगी। वास्तव में, स्वर्ग क्योंकि एक आत्मिक स्थान है, इसलिये उसकी सुंदरता और विशालता का अन्दाज़ा शारीरिक या ज़मीनी दृष्टिकोण से तो हम लगा ही नहीं सकते। लेकिन यह बात सच है, कि स्वर्ग से अधिक कीमती, और चाहने योग्य, बहुमूल्य और विशाल, और कोई वस्तु नहीं है। और प्रभु यीशु मसीह ने तो यहाँ तक कहा था, कि यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए, यानि स्वर्ग में प्रवेश करने से तुझे रोके तो उसे काट डाल, क्योंकि टून्डा होकर स्वर्ग के जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो हाथ रहते हुए तू नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे भी काट डाल। क्योंकि लंगड़ा होकर स्वर्ग के जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो पांव रहते हुए तू नरक में डाला जाए। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे भी निकाल डाल, क्योंकि काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक में डाला जाए, जहाँ उनका अस्तित्व समाप्त नहीं होता और आग कभी बुझती नहीं। (मरकुस ९:४३–४८)।

यानि परमेश्वर के राज्य का महत्व ऐसा विशाल है कि उसे प्राप्त करने के लिये या उसमें प्रवेश करने के लिये मनुष्य को चाहे

कुछ भी देना पड़े, या अपना कुछ भी खोना पड़े तो वह उसके सामने कुछ भी नहीं हैं। प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर कहा था, कि स्वर्ग का राज्य एक खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर उसे छिपा दिया था, और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल ले लिया था। यीशु ने सिखाया था, कि स्वर्ग का राज्य एक व्योपारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। और जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया (मत्ती १३:४४–४६)।

लेकिन बाइबल में लिखा है, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे। धोखा न खाओ, बाइबल कहती है, न वेश्यागामी, न मूर्तीपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरूषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अंधेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। (१ कुरिन्थियों ६:९,१०)। इसलिये, परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को एक नया इन्सान बनने की आवश्यकता है। जैसे कि यीशु के चेलों ने लोगों को परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाकर उनसे कहा था, कि तुम में से हर एक अपना-अपना मन फिराकर, अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु के नाम से बपतिस्मा ले। (प्रेरितों २:३८)। यीशु ने नीकुदेमुस से कहा था, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना ३:३,५)। इसका अर्थ यह है, कि परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिये हर एक इन्सान को परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में होकर एक नया और पवित्र मनुष्य बनने की आवश्यकता है। बाइबल में लिखा है, कि अब जो यीशु मसीह में हैं वे एक नई सृष्टि हैं और उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं होगी, क्योंकि अन्होंने यीशु की आज्ञा मानकर उसे अपने ऊपर धारण कर लिया है, और यीशु मसीह ने उनके पाप के दन्ड को स्वयं अपने ऊपर उठा लिया है। (२

कुरिन्थियों ५:१७; रोमियों ८:१; २ कुरिन्थियों ५:२१)।

प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है उन में से हरएक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु केवल वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। (मत्ती ७:२१)। और उस स्वर्गीय पिता की इच्छा हम सब के लिये यह है, कि पृथ्वी पर हर एक इन्सान उसके पुत्र यीशु मसीह में यह विश्वास लाए कि वह परमेश्वर की इच्छा से सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। और परमेश्वर चाहता है, कि हम में से हर एक वर्तमान की अपनी ज़िन्दगी की बातों से अपना-अपना मन फिराए। और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर उसे पहन ले। और प्रतिदिन अपना जीवन उसी की आज्ञानुसार चलकर व्यतीत करे। परमेश्वर की इच्छा से, उसका पुत्र यीशु मसीह जगत के सब लोगों का मुक्ति दाता है। वह हम सब के जीवनों के लिये परमेश्वर का दिया हुआ और उसका ठहराया हुआ एक आदर्श है। उसने अपने जीवन में परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा का पालन करके उसकी इच्छा को पूरा किया था–यहाँ तक कि उसने परमेश्वर् की इच्छा को मानकर जगत के सब लोगों के पापों का भार अपने ऊपर उठा लिया था, और उसी की इच्छा से वह सारे जगत के पापों के लिये दोषी ठहराया जाकर क्रूस पर चढ़ाया गया था। आज, यीशु परमेश्वर के राज्य में उसके साथ है, जहाँ वह हमेशा उसके साथ रहेगा, जैसे कि वह सदा से उसके साथ था। और ऐसे ही, हम सब भी, यदि हम परमेश्वर की इच्छा को मानकर यीशु मसीह में हो जाएं, उसे धारण कर लें, उसे अपना मुक्तिदाता और उद्धाराकर्त्ता बना लें; और उसे अपने-अपने जीवनों का आदर्श बनाकर उसकी सी चाल चलें, और उसका सा स्वभाव रखें। तो उसके कारण, परमेश्वर की इच्छा को मानकर हमें यह आश्वासन हो जाएगा, और यह निश्चय हो जाएगा; कि हम भी यीशु के कारण परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे और उसके साथ रहेंगें। इसी बात को बाइबल में "सुसमाचार" यानि परमेश्वर की ओर से

मनुष्यों के लिए एक खुशी का पैगाम कहा गया है। और वास्तव में क्या इस से बड़ी खुशी की कोई और बात हो सकती है ? यदि हम इस जीवन में परमेश्वर के इस सुसमाचार को नहीं मानेंगे तो फिर हमारे पास भविष्य के लिए क्या आशा है ? किस आशा या आश्वासन या निश्चय के साथ हम इस संसार से जाएँगे या क्या परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने का काई और उपाय है ? यदि हम अपने कर्मो पर आस लगाए बैठे हैं तो हम एक बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। क्योंकि हम अपने प्रयत्नों से कभी भी एक पवित्र और सिद्ध और परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य के योग्य जीवन व्यतीत नहीं कर सकते। क्योंकि यदि ऐसा वास्तव में होता, यानि यदि हम स्वयं ही अपने प्रयत्नों से अपने पापों से मुक्ति पाकर अपने आपको परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य के योग्य बना लेते, तो फिर क्या हमें परमेश्वर की आवश्यकता होती ?

प्रभु यीशु मसीह ने यह कहा था, कि 'हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'' (मत्ती ११:२८)। परमेश्वर का पुत्र आपके सारे बोझ अपने ऊपर उठाना चाहता है। क्योंकि परमेश्वर आप से प्रेम करता है और आपको स्वर्ग में हमेशा का जीवन देना चाहता है। क्या आप उस पर विश्वास लाकर उसके पास आएंगे ?

सबको बपतिस्मा लेने की आज्ञा मसीह ने क्यों दी है ?

प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व और शिक्षाओं में हमें कुछ बड़ी ही निराली और विचित्र बातें देखने को मिलती हैं। यद्यपि कि बाइबल कहती है कि वह वचन जो परमेश्वर था, स्वर्ग में परमेश्वर के साथ था। तौभी वह मनुष्यों का उद्धार करने के लिए पृथ्वी पर आ गया था। और पृथ्वी पर आकर उसने एक दास का सा जीवन व्यतीत किया था। उसने किसी से भी अपनी सेवा करवाई नहीं थी पर उसने सबकी सेवा की थी। हांलाकि उसने अपने लिए बारह चेलों को चुना था। परन्तु उन्हें उसने इसलिए नहीं चुना था कि वे उसकी सेवा-टहल करें पर उन्हें उसने इस उद्देश्य से चुना था कि वह उन्हें इस बात के लिए शिक्षा देकर तैयार करे कि उसकी मृत्यु के बाद और स्वर्ग पर जाने के बाद वे उसके उद्धार के सुसमाचार को सारी दुनिया में ले जाएंगे। और जहाँ तक सेवा करने की बात है तो उसने खुद उनकी भी सेवा की थी, और यहाँ तक कि उसने अपने हाथों से उनके पांव धोए थे। और ऐसा करके उसने उन्हें भी यह सिखाया था कि वे भी आपस में सेवा-भावना का ही बर्ताव रखें। और प्रभु ने उन्हें सिखाया था, कि अगर तुम में से कोई बड़ा बनना चाहे तो वह सबसे छोटा बने ! है न बड़ी अजीब बात !!

और, स्वयं अपने बारे में यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि, "यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ; मैं मिलाप कराने को नहीं पर तलवार चलवाने आया हूँ। मैं तो आया हूँ कि मनुष्य को उसके पिता से और बेटी को उसकी मां से और बहु को उसकी सास से अलग करा दूँ। मनुष्य के बैरी" यीशु ने कहा था, "उसके घर ही के लोग होंगे जो माता या पिता को मुझ

से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है वह मेरे योग्य नहीं। और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने प्राण बचाता है वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।'' (मत्ती १०:३४–३९)।

कितनी विचित्र बात है यह !! कि वह, जिसे बाइबल में शान्ति का राजकुमार और मेल-मिलाप करानेवाला, न केवल इन्सानों का इन्सानों से पर इन्सानों का परमेश्वर से और प्रेम करनेवाला ईश्वर कहा गया है; वह स्वयं कह रहा है, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने नहीं पर तलवार चलवाने और फूट डलवाने आया हूँ। दूसरी ओर, हम यह देखते हैं, कि उसने सब जाति और धर्म के लोगों को एक करने के लिए अपनी जान तक दे दी थी। पर फिर, उसने यूं क्यों कहा था, कि मैं तलवार चलवाने और लोगों में आपस में फूट डलवाने आया हूँ ?

वास्तव में, यह कहकर यीशु ने एक बहुत बड़ी भविष्यवाणी की थी, एक ऐसी भविष्यवाणी जो आज संसार में सब जगह लोगों के बीच में पूरी हो रही है। आज दुनियाँ भर में लाखों ऐसे लोग हैं जो प्रभु यीशु मसीह के अनुयायी होने के कारण तरह-तरह से खुद अपने ही सगे-सम्बन्धियों के हाथों भांति-भांति के दुख उठा रहे हैं। मसीह के पीछे चलने के कारण उन्हें मारा और सताया जा रहा है; उनके अपने ही घर के लोग उनके बैरी बन गए हैं। लेकिन प्रभु चाहता है, कि उसके मार्ग पर चलने के लिए हम अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहें ! क्योंकि उसका मार्ग-उद्धार, मुक्ति और अनन्त जीवन का मार्ग है। उसने कहा था, कि मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ बिना मेरे द्वारा कोई मनुष्य परमेश्वर के पास नहीं आ सकता। इसलिए संसार को खोकर उसे पाना स्वर्ग में हमेशा के जीवन को पाना है। क्योंकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। वह हमारे गुनाहों का छुटकारा है। उसने हमारे स्थान

पर हमारे पापों का दण्ड प्राप्त किया था। वह परमेश्वर की योजना से और उसकी इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मारा गया था, और एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था और फिर तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठा था। वह एक मरा हुआ नहीं पर मनुष्यों का एक ज़िन्दा उद्धारकर्त्ता है। और उसी ने, स्वर्ग पर वापस जाने से पहले अपने चेलों को यह आज्ञा दी थी कि तुम संसार में सब जगह जा-जाकर सब लोगों को मेरा सुसमाचार सुनाओ और जो मेरे सुसमाचार को सुनकर विश्वास लाएं उन्हें आज्ञा दो कि वे हर एक बुराई से अपना मन फिराएँ और फिर पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें। और फिर मेरे बताए हुए आदर्शों पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करें। और प्रभु ने प्रतिज्ञा करके कहा था कि जो लोग ऐसा करेंगे मैं उनके पापों से उनका उद्धार करूंगा और अन्त में उन्हें स्वर्ग में हमेशा का जीवन दूंगा।

यह परमेश्वर का सुसमाचार है जो दुनिया में सब लोगों के लिये है। हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है। और हम सब के लिये उसका एक ही मुक्ति का मार्ग है। पर शायद आप यह जानना चाहें, कि यीशु ने हर एक मनुष्य को बपतिस्मा लेने की आज्ञा क्यों दी है ? इसका मुख्य कारण यह है कि प्रभु चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य अपने वर्तमान जीवन के लिये मर जाए और एक नया जीवन प्राप्त करके, एक नई सृष्टि का सा जीवन व्यतित करे। क्योंकि बिना नया जन्म प्राप्त किये, यीशु ने कहा था, कोई परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। और नया जन्म प्राप्त करने के लिये मरना ज़रूरी है। जैसे की एक बीज भूमी में पड़कर मर जाता है, और फिर एक नए व्यक्तित्व के साथ फिर से पैदा होता है। बपतिस्मा लेने का अर्थ भी ठीक यही है। क्योंकि बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य पानी के भीतर गाड़ा जाता है। और उसमें से बाहर निकलकर एक नया इन्सान बन जाता है। हमारा उद्धार करने के लिये, हमें पापों से

छुटकारा दिलाकर, स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी पाने की आशा देने के लिये, परमेश्वर के वचन ने स्वर्ग से पृथ्वी पर आकर क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित किया था; और वह कब्र में गाड़ा गया था और जी उठा था। बपतिस्मा लेने के द्वारा प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के उद्धार के सुसमाचार के इस सांचे में ढ़ाला जाता है। सुसमाचार है: पापियों के लिये मसीह का मरना, गाड़े जाना और जी उठना (१ कुरिन्थियों १५:१–४)। बाइबल में इसी बात को उद्धार के सुसमाचार का "सांचा" कहा गया है, जिसके भीतर ढ़ाले जाने से प्रत्येक मनुष्य का पापों से उद्धार होता है।

बाइबल में लिखा है कि, "क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए जिसके सांचे में ढाले गए थे, और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" (रोमियों ६:३,४ तथा १७,१८)। वे लोग पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए थे, क्योंकि वे उस उपदेश के सांचे में ढाले गए थे जो उन्हें सुनाया गया था। अर्थात् यह कि परमेश्वर का पुत्र मसीह उनके पापों के लिये मारा गया था और गाड़ा गाया था, और जी उठा था। यह संसार के हरएक इन्सान के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर का सुसमाचार है। और प्रभु यीशु ने यह आज्ञा दी है कि मुक्ति और उद्धार पाने के लिये हरएक मनुष्य इस सुसमाचार के सांचे में ढ़ाला जाए। यानि हरएक बुराई से मन फिराकर पाप के लिये मरे, और पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी में गाड़ा जाए, और एक नए मनुष्यत्व की चाल चलने के लिये पानी की कब्र में से बाहर आए।

सो मैं समझता हूँ, कि इन बातों पर विचार करने से हमें

यह बात ठीक से समझ में आ गई है, कि क्यों प्रभु यीशु ने यह आज्ञा दी है, कि उद्धार पाने के लिये सब लोगों को बपतिस्मा लेना ज़रूरी है। बपतिस्मा लेने का अर्थ स्नान करने से या शारीरिक गन्दगी को दूर करने से नहीं है, पर सच्चे विवेक से अपने आपको परमेश्वर को सौंप देने से है। (१पतरस ३:२१)।

अब यदि आप सारे मन से मसीह में विश्वास करके उसके सुसमाचार के सांचे में ढाले जाना चाहते हैं, तो हमें ज़रूर बताएं। हम आपकी सहायता करेंगे, ताकि आप मसीह को धारण करके उसके एक अच्छे और सच्चे अनुयायी बन जाएं।

मनुष्य क्या है ?

मित्रो, यह सचमुच में बड़ी ही अनोखी बात है, कि परमेश्वर जो कि ऐसा महान है, जिसने सारी सृष्टि की रचना की है, वह हम सब इन्सानों से ऐसा विशाल प्रेम रखता है, कि उसने अपने ही एकलौते पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित के फलस्वरूप बलिदान किया है। अब, जब कि हम परमेश्वर के एकलौते पुत्र के बारे में विचार करते हैं तो हम इस बात को इन्सानी नज़रिये से देखने की कोशिश न करें। क्योंकि परमेश्वर न तो इंसान है, और न ही इन्सानों की तरह उसका कोई इंसानी पुत्र है। परमेश्वर तो वास्तव में आत्मा है। उसका व्यक्तित्व तो है, पर मनुष्यों का जैसा नहीं है। उसने दर्शनीय वस्तुओं की रचना तो की है, पर वह स्वयं अदृश्य है। हम उसके द्वारा बनाई हुई वस्तुओं को तो देख सकते हैं, पर खुद उसको नहीं देख सकते जो खुदा है, क्योंकि वह आत्मा है। और जैसे कि स्वयं परमेश्वर आत्मा है, ऐसे ही उसका वचन भी आत्मिक है। पवित्र पुस्तक बाइबल में एक जगह यूं लिखा है, कि, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था।" (यूहन्ना १:१–२) अर्थात् बाइबल में परमेश्वर को "एक वचन" में नहीं परन्तु "बहुवचन" में प्रस्तुत किया गया है। अब यहां मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है, कि परमेश्वर एक से अधिक हैं, या अनेक परमेश्वर हैं। किन्तु, परमेश्वर तो वास्तव में एक ही है। परन्तु उस एक परमेश्वर में व्यक्तित्व अनेक हैं। जैसे कि स्वयं आपके भी दो व्यक्तित्व हैं। आप भौतिक भी हैं और आप आत्मिक भी हैं। आप केवल आप हैं, लेकिन आपका एक व्यक्तित्व बाहरी है और दूसरा अन्दरूनी है। यानी, आप जिस्मानी भी हैं और रूहानी भी हैं; आप शारीरिक हैं और आप आत्मिक भी हैं। सो आपका व्यक्तित्व वास्तव में दोहरा है। लेकिन तौभी आप केवल एक हैं। ऐसे ही परमेश्वर भी

है। वह स्वयं तो केवल एक ही है। पर उसके व्यक्तित्व अनेक हैं। वही परमेश्वर पिता है, और वही परमेश्वर पुत्र है, और वही परमेश्वर आत्मा है। जब परमेश्वर का ज़िन्दा, आत्मिक वचन देहधारी होकर और एक मनुष्य बनकर पृथ्वी पर रहने के लिये आया था तो वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वयं आया था। उसने स्वयं अपना परिचय यह कहकर दिया था, कि वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र है जिसे जगत का उद्धार करने के लिये परमेश्वर ने जगत के लिये दिया है। पर क्यों परमेश्वर का वचन उसके पुत्र के रूप में पृथ्वी पर प्रकट हुआ था ? क्यों नहीं वह किसी और रूप में संसार में आया था ? इसके दो बड़े ही मुख्य कारण थे। एक तो यह, कि मनुष्यों के ऊपर परमेश्वर अपने महान प्रेम को इस प्रकार प्रदर्शित करना चाहता था। क्योंकि कौन वह इन्सान है जो अपनी संतान को किसी के लिये, और विशेषकर अपने बैरियों के लिये कुर्बान कर दे ? लोग अपने बच्चों को मरने से बचाना चाहते हैं। वे सब कुछ करके अपने बच्चों को बचाते हैं, क्योंकि वे उनसे प्यार करते हैं। और मान लीजिये, कि किसी की एक ही सन्तान है, तो क्या वे उसे किसी की छुड़ौती के लिये दे देंगे ? हरगिज़ नहीं ! वे अपना सब कुछ दे देंगे, पर अपनी संतान को नहीं खोना चोहेंगे, किसी भी कीमत पर। अपनी जान से भी बढ़कर उन्हें अपनी उस एकलौती संतान की जान की चिन्ता होगी। क्योंकि उस से बढ़कर संसार में उनके लिये कोई और वस्तु नहीं हो सकती।

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है। वह जानता है कि इन्सान सबसे अधिक किस वस्तु से प्रेम करता है। इसलिये हम देखते हैं, कि उसने जब मनुष्य को पाप के दन्ड से बचाने की योजना बनाई, तो उसने अपने ही वचन को देहधारी बनाकर अपने एकलौते पुत्र के रूप में संसार में भेज दिया। और इसके द्वारा उसने इस बात को प्रदर्शित किया कि वह इन्सानों से कैसा महान प्रेम करता है। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत के लोगों से ऐसा प्रेम

रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। यहाँ इस बात पर खास ध्यान दें कि परमेश्वर ने इन्सानों से केवल प्रेम ही नहीं रखा, पर उसने "ऐसा" प्रेम रखा। यानि, ऐसा, कि उस ने उनके पापों का प्रायश्चित करने को स्वयं अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ! "प्रेम इस में नहीं", बाइबल कहती है, "कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४:१०)। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:६–८)।

सो परमेश्वर ने अपने वचन को संसार में अपने एकलौते पुत्र के रूप में भेजकर और उसे जगत के पापों का प्रायश्चित बनाकर सारी मानवता के पापों के लिये बलिदान करके एक ओर तो अपने महान प्रेम को संसार पर प्रदर्शित किया था। दूसरी ओर, परमेश्वर के पुत्र ने अपने पिता की आज्ञा को मानकर, सारी मानवता के सामने यह आदर्श रखा था, कि परमेश्वर की आज्ञा को मानकर और उसकी आज्ञानुसार चलकर ही, हम अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके फिर से परमेश्वर के संतान कहलाने का हक प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि "पुत्र होने पर भी" बाइबल में लिखा है, "उसने दुख उठा–उठाकर आज्ञा माननी सीखी और इस प्रकार सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये वह सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५:८–९)। बाइबल में लिखा है, कि "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो

गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।'' (फिलिप्पियों २:५–८)।

परमेश्वर के वचन, अर्थात् परमेश्वर के एकलौते पुत्र यीशु मसीह को क्रूस की भयानक मृत्यु का दन्ड उठाना पड़ा। क्योंकि उसके बलिदान के कारण परमेश्वर हर एक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था।

लेकिन क्यों परमेश्वर ने मनुष्य को पाप के दन्ड से बचाने के लिये ऐसा महान कार्य किया ? मनुष्य में ऐसा क्या है, कि परमेश्वर ने उससे ऐसा प्रेम रखा कि उसे बचाने के लिये उस ने अपने ही एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया ? जब हम स्वयं अपने आप को देखते हैं; तो हमें अपने भीतर ऐसी कोई बात नज़र नहीं आती कि हम परमेश्वर के ऐसे महान अनुग्रह और प्रेम के काबिल हों। क्योंकि हम स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से दूर हैं; और उससे अलग हुए; और नरक के अनन्त विनाश के दन्ड के योग्य बने। फिर क्यों परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलवाने के लिये ऐसा महान कार्य किया ? इस का केवल एक ही कारण था– और वह यह था, कि मनुष्य परमेश्वर का वंश है ! इन्सान को परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर और अपनी समानता पर बनाया था। हम सब वास्तव में एक ही परमेश्वर की संतान हैं। हां, हम सब ने पाप किया है। और हम सब स्वयं अपने ही पाप के कारण अपने परमेश्वर से अलग हो गए हैं। किन्तु परमेश्वर ने हमे फिर से अपने पास आने का एक मार्ग दिया है। और वह है उसका पुत्र यीशु मसीह। जो हमारे पापों का छुटकारा है; और जिसके द्वारा हम फिर से अपने परमेश्वर के पास वापस आ सकते हैं। कैसे ? जब हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाते हैं कि वह हमारा उद्धारकर्त्ता है, जब हम उसे परमेश्वर का पुत्र मानकर अपने पापों से मन फिराते हैं और अपने पापों कर क्षमा पाने के लिये पानी में गाड़े जाकर उसके

नाम से बपतिस्मा लेते हैं, तो प्रभु यीशु हमारे पापों से हमारा उद्धार करता है; और हमें एक नया इन्सान बनाकर फिर से परमेश्वर के साथ हमारा मेल करवा देता है।

बाइबल में इस बात को सुसमाचार कहा गया है। क्योंकि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले, और अंत में अपनी आत्मा की ही हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ? क्या आपने अपने आत्मिक जीवन की सुरक्षा का प्रबन्ध कर लिया है ? क्या आप ने परमेश्वर के उस उद्धार को प्राप्त कर लिया है जिसे वह आपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा हर एक मनुष्य को देता है ?

क्या इस समबन्ध में हम आप की कोई सहायता कर सकते हैं ?

सबने पाप किया है

मनुष्यों की किसी भी भाषा में सबसे अधिक दुख-पूर्ण या शोकजनक शब्द यदि देखा जाए, तो वह शब्द है "खोना" या "खो देना।" कभी-कभी लोगों के कुछ ज़रूरी कागज़ात खो जाते हैं - मकान या जायदाद के कागज़ या कोई और ज़रूरी कागज, जिन्हें लोग बड़ा ही सम्भालकर रखते हैं। कुछ लोगों के शरीर के अंग किसी दुर्घटना में खो जाते हैं। और कुछ लोग अपने बड़े ही प्रिय जनों को बीमारी या मौत के कारण खो देते हैं। खोना सचमुच में बड़ी ही अफ़सोसनाक बात है। लेकिन खोने के विपरीत शब्द है "पाना" या 'मिलना" और मनुष्यों की किसी भी भाषा में यह शब्द वास्तव में बड़ा ही सुखदायक और खुशी देनेवाला शब्द है। अगर आपने अपनी किसी बड़ी ही ख़ास चीज़ को कभी खोकर उसे फिर से पाया है, तो आप जानते हैं कि मैं आप से क्या कह रहा हूँ। चाहे जितना भी दुख आप को उस वस्तु के खोने पर हुआ हो, उस से कहीं अधिक खुशी आप को उस वस्तु के फिर से मिल जाने पर हुई होगी।

ऐसे ही बाइबल में एक जगह पर हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में इस प्रकार पढ़ते हैं कि, "सब चुंगी लेनेवाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उसकी बातें सुनें।" प्रभु यीशु मसीह के बात करने का और सिखाने का तरीका सचमुच में बड़ा ही अनोखा था। वास्तव में उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही बड़ा निराला था। उसमें और उसकी बातों में एक बड़ा ही अजीब आकृषण था, जिस से लोग उसके पास, उसकी बातें सुनने के लिये खिंचे चले आते थे। पर यह बात यहूदियों के फरीसियों और शास्त्रियों को बड़ी ही बुरी लगती थी। सो बाइबल में लिखा है कि वे "कुड़कुड़ाकर कहने

लगे, कि यह तो पापियों से मिलता है और उनके साथ खाता भी है। इस पर यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा, कि "तुम में से कौन है जिस की सौ भेड़ें हो और उनमें से एक खो जाए तो निन्यानवें को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे ? और जब मिल जाती है, तो वह बड़े आनन्द से उसे कान्धे पर उठा लेता है। और घर में आकर अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है। मैं तुम से कहता हूँ," प्रभु यीशु ने उन से कहा, "कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में ऐसा ही आनन्द होगा, जितना कि निन्यानवें ऐसे धर्मियों के विषय में नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है।"

"या कौन सी ऐसी स्त्री होगी" यीशु ने फिर कहा, "जिसके पास चांदी के दस सिक्के हों, और उन में से एक खो जाए; तो वह दिया जलाकर और घर झाड़-बुहारकर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे ? और जब मिल जाता है, तो वह अपनी सखियों और पड़ोसियों को एकत्रित करके कहती है, कि मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।" मैं तुम से कहता हूँ, यीशु ने उन से कहा, "कि इसी तरह से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।"

और फिर यीशु ने उन के सामने एक और बड़ा ही शिक्षाप्रद दृष्टान्त रखकर इस प्रकार कहा था, कि किसी आदमी के दो बेटे थे, "उन में से छोटे ने पिता से कहा, कि पिता, सम्पत्ति में से जो भाग मेरा है, वह मुझे दे दीजिए। सो, उसने अपनी सम्पत्ति बांट दी। और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया, और वहाँ उसने कुकर्मों में अपनी सारी सम्पत्ति उड़ा दी। सो जब वह अपना सब कुछ खर्च कर चुका, तो ऐसा हुआ कि उस देश में एक बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। तब वह उस देश के निवासियों में से किसी एक के यहाँ

जा पड़ा। सो उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा। और वह चाहता था कि उन फलियों से, जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था। किन्तु, एक दिन, जब वह अपने आपे में आया, तब वह सोचने लगा, कि मेरे पिता के घर में उसके कितने ही मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा, और उस से कहूंगा, कि पिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। और अब मैं इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ, किन्तु मुझे अपने एक मज़दूर की तरह रख ले। सो, तब वह उठकर अपने पिता के पास चला। लेकिन वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर उस पर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। तब पुत्र ने उससे कहा, कि पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब मैं इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊँ। परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, तुरन्त अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ, और इसके हाथ में अंगूठी, और पैरों में जूतियां पहनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनाएं, क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था अब मिल गया है; और वे आनन्द करने लगे।'' (लूका १५)।

यहाँ, इस कहानी में, जिस बात पर सबसे अधिक बल दिया गया है, वह यह है कि मनुष्य को चाहिए कि वह प्रत्येक बुराई और पाप से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास आ जाए। क्योंकि मनुष्य पाप में खोया हुआ है। किन्तु परमेश्वर को मनुष्यों की चिन्ता है। जैसे कि प्रभु यीशु ने अपने दृष्टान्त में बताया था, कि वह स्त्री अपने खोए हुए सिक्के के विषय में चिन्तित थी; और वह आदमी, जिसकी एक भेड़ खो गई थी; अपनी भेड़ के खो जाने से दुखी था; और वह पिता, जिसका बेटा उसे छोड़कर उस से दूर चला गया था, हर एक दिन अपने पुत्र के वापस लौट आने की प्रतीक्षा कर रहा

था। ऐसे ही हमारे परमेश्वर को भी प्रत्येक मनुष्य की चिन्ता है; और वह इस बात की प्रतीक्षा में रहता है कि कब कौन मनुष्य अपना मन फिराकर उसके पास वापस लौट आए। और प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब भी कोई पापी मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस आता है तो परमेश्वर के स्वर्ग में बड़ा ही आनन्द मनाया जाता है।

उस स्त्री के लिये वह चांदी का खोया हुआ सिक्का बड़ा ही कीमती था; और उस आदमी के लिये उसकी खोई हुई भेड़ का महत्व बहुत ही बड़ा था; और ऐसे ही उस पिता के लिसे उसका खोया हुआ पुत्र मूल्यवान था। वे सब अपनी उन खोई हुई चीज़ों की कीमत जानते थे। और ऐसे ही हमारा सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर हम सब का मूल्य जानता है। क्योंकि उसने मनुष्य को अपनी आत्मिक समानता पर बनाया है। वह जानता है, कि उसके द्वारा बनाई हुई जगत की प्रत्येक वस्तु नाशमान है। किन्तु मनुष्य, जिसे उसने अपनी आत्मिक समानता पर बनाया है, पमेश्वर का स्वरूप होने के कारण हमेशा वर्तमान रहेगा। लेकिन प्रत्येक मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग और दूर है। और परमेश्वर नहीं चाहता कि मनुष्य हमेशा के लिए उससे अलग और दूर रहे। सो वह मनुष्य को ढूँढ़ने और बचाने के लिये यीशु के द्वारा स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया। उस ने मनुष्यों को पाप के दन्ड से बचाने के लिये, जगत के सारे पापों को अपने ऊपर ले लिया; और क्रूस पर अपने आप को जगत के पापों के लिये बलिदान करके सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित कर दिया। और अब वह इस बात की इन्तिज़ार में है, कि प्रत्येक मनुष्य अपना मन फिराकर उसके पास लौट आए।

बाइबल में परमेश्वर ने हम सब के लिये खुशी का यह समाचार लिखवाया है, कि जब भी कोई मनुष्य यीशु मसीह पर यह विश्वास लाता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है, जो जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मारा गया था; और पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये पानी में गाड़े जाकर यीशु

की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेता है; तो उसी क्षण परमेश्वर उस व्यक्ति के सारे पाप क्षमा करके उसे अपने उन लोगों की मन्डली में मिला लेता है, जिसमें वे सब लोग हैं जिनका पाप से उद्धार हुआ है। और उस मन्डली का नाम है : मसीह की कलीसिया। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३७-४७; १ कुरिन्थियों १२:२७; इफिसियों १:२२,२३)। क्या आप भी परमेश्वर की आज्ञा मानकर उसकी कलीसिया में शामिल होना चाहते हैं ? अगर इस बारे में आप और अधिक जानना चाहते हैं, तो हमें लिखकर ज़रूर बताईए।

परमेश्वर अपने वचन के सब सुननेवालों को और विशेषकर उस पर चलनेवालों को आशीष दे।

क्रूस का प्रदर्शन

क्या आप जानते हैं, कि यह सब कुछ जो मैं आपसे कह रहा हूँ, क्यों कह रहा हूँ ? ये बातें मैं आप से इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि एक दिन, इस संसार के इतिहास में ऐसा दिन आया था जिस दिन एक व्यक्ति को निर्दोष होते हुए भी एक क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला गया था। उसी व्यक्ति का नाम यीशु मसीह था। जिस समय यीशु मसीह का जन्म इस पृथ्वी पर हुआ था, और जिस स्थान पर उसका जनम हुआ था। उस समय वहाँ पर एक दोषी व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ाकर मार डालने की प्रथा प्रचलित थी। पर यीशु मसीह को निर्दोष होते हुए भी एक दोषी व्यक्ति की तरह क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था। क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा थी। और परमेश्वर की इच्छा को कौन टाल सकता है ? या, उसकी इच्छा का सामना कौन कर सकता है ? और अगर यह परमेश्वर की इच्छा न होती तो किसमें इतनी शक्ति थी की वह परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाकर मार सकता था ? क्योंकि यीशु परमेश्वर का पुत्र था। लेकिन परमेश्वर का पुत्र कैसे हो सकता है ? शायद आप यह बात पूछें। क्या परमेश्वर मनुष्य है ? नहीं ! परमेश्वर तो वास्तव में आत्मा है। और उसी परमात्मा ने अपने वचन को एक मनुष्य के रूप में धरती पर भेजा था। और, क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा से और उसकी सामर्थ से इस पृथ्वी पर आया था, इसलिये वह परमेश्वर का पुत्र कहलाया था। बाइबल में, यानि परमेश्वर के वचन की पुस्तक में इस प्रकार लिखा हुआ है, कि, परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

सो, परमेश्वर ने मनुष्यों को अनन्त जीवन देने के लिये, अपने एकलौते पुत्र को दे दिया। अर्थात्, उसने अपने ही पुत्र को मनुष्यों

के हाथों में सौंप दिया था, ताकि वे उसे पकड़कर कूस पर चढ़ाकर मार डालें। पर क्यों ? क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि सब मनुष्यों ने पाप किया है और सब के सब परमेश्वर से अलग हैं और नरक की अनन्त मृत्यु के योग्य हैं। यह एक ऐसी विशाल और महत्वपूर्ण बात है, जिस पर मनुष्य कोई ध्यान नहीं देता। सब के सब मनुष्यों को केवल अपने-अपने शारीरिक जीवनों की ही चिन्ता है। स्कूल जाना है, दफ्तर जाना है, काम पर जाना है, खाने-पीने की चीज़ें लानी हैं, कपड़े धोने हैं, एक-दूसरे से मिलने जाना है, शादी-ब्याह करने हैं; और न जाने क्या-क्या दुनिया भर के कामों में लोग व्यस्त रहते हैं। भूल जाते हैं लोग इस दुनिया के झमेलों में कि वे सब आत्मिक प्राणी हैं। उनके पास आत्मा है। जिसका अस्तित्व कभी खतम हो ही नहीं सकता। और परमेश्वर को हमारे उसी कभी न खतम होनेवाले आत्मिक अस्तित्व की चिन्ता है। क्योंकि उसका अनन्त-निवास-स्थान या तो परमेश्वर के साथ होगा या फिर परमेश्वर से अलग होगा। परमेश्वर के साथ रहने का अर्थ है स्वर्ग में रहना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में हैं। और परमेश्वर से अलग होकर रहने का अर्थ है नरक में रहना, क्योंकि नरक वह जगह है जहाँ परमेश्वर नहीं है।

परमेश्वर, जिसने मनुष्य को बनाया है, जानता है, कि मनुष्य, आत्मिक, अविनाशि और अनन्त प्राणी है। और वह यह भी जानता है कि प्रत्येक मनुष्य पाप में है, और पाप के कारण वह नरक की अनंत मृत्यु के ही योग्य है। इसलिये परमेश्वर ने जगत के लिये अपने एकलौते पुत्र को दे दिया था, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित हो जाए। और मनुष्यों के बनाए कूस को परमेश्वर ने अपने प्रेम के प्रदर्शन के लिऐ चुन लिया था। परमेश्वर की बाइबल में इस प्रकार लिखा है : "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे यह तो दुर्लभ बात है, परन्तु क्या जाने किसी भले

मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' (रोमियो ५:६-८)।

इसीलिये, एक जगह पर बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि, क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये तो मूर्खता है, पर जो उद्धार पाएंगे, उनके लिये वह परमेश्वर की सामर्थ है। क्रूस एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर ने अपने अद्‌भुत प्रेम को और अपनी विशाल सामर्थ को सारी मानवता पर प्रदर्शित किया है। यद्यपि कि आज लोगों ने क्रूस के विशेष महत्व को भुला दिया है। वे उसे गले में लटकाकर घूमते हैं। वे क्रूस की पूजा करते हैं। पर वास्तव में परमेश्वर आज हम से यह चाहता है, कि हम क्रूस पर ध्यान करके इस बात को सोचें कि हमारा परमेश्वर हमसे कैसा अद्‌भुत प्रेम करता है ! उसने हमारे पापों के बदले में अपने एकलौते पुत्र को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया था। क्रूस पर की भयानक मृत्यु को स्वीकार करके उसने अपना खून बहाकर हमारे पापों का प्रयश्चित कर दिया था। सो क्रूस पर विचार करके हमें परमेश्वर के प्रेम की याद आनी चाहिए। कि क्रूस पर उसने हमारे दुखों को और हमारे दन्ड को, और हमारे पापों को स्वयं अपने ऊपर उठा लिया! इसी प्रकार, क्रूस पर विचार करके हमारा ध्यान परमेश्वर की महान सामर्थ पर जाना चाहिए। हमें यह सोचना चाहिए, कि अपनी अद्‌भुत सामर्थ का प्रदर्शन किस निराले ढंग से परमेश्वर ने क्रूस पर से किया था ! उसने अपने वचन को एक मनुष्य बनाकर ज़मीन पर भेज दिया। उस ने होने दिया, कि वह एक दोषी ठहराया जाए, यद्यपि कि उसमें कोई भी दोष नहीं था! फिर उसने होने दिया, कि उसे क्रूस पर चढ़ाकर एक अपराधी की तरह सज़ा दी जाए ! और उसे दोषी ठहराकर और एक अपराधी के समान सज़ा दिलवाकर परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रयश्चित कर दिया। आज, क्रूस पर विचार करके हम इस बात को दावे के साथ कह सक्ते हैं, कि हमारा एक ऐसा परमेश्वर है, जो हम

से वास्तव में बड़ा ही अद्‌भुत प्रेम करता है। और हमारा परमेश्वर सचमुच में बड़ा ही महान् है और सामर्थी है। क्योंकि क्रूस के द्वारा हम परमेश्वर के प्रेम और उसकी सामर्थ दोनों को एक साथ देखते हैं।

सो मैं आप को एक ऐसे परमेश्वर के बारे में बता रहा हूँ जो सच्चा और ज़िंदा परमेश्वर है। वह परमेश्वर, जिसने सारी सृष्टि को, और आप को और मुझे बनाया है। वह परमेश्वर, जिस की तुलना न तो किसी मनुष्य से की जा सकती है, न आकाश और न पृथ्वी की किसी वस्तु से की जा सकती है। वह परमेश्वर जो परम-आत्मा है और जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी और सर्वविद्यमान है। वह परमेश्वर जो सदा से है और सदा रहेगा। जिसकी कोई सूरत या मूरत नहीं बनाई जा सकती। वही हम सब का स्वर्गीय पिता है, जिसने इस संसार में रहने के लिये हमें जीवन दिया है। वह हम सब से प्रेम रखता है, और वह हमे पाप की मजदूरी, अर्थात पाप के दन्ड से बचाना चाहता है। उसने अपने अद्‌भुत प्रेम को और अपनी अद्‌भुत सामर्थ को सारे जगत पर प्रदर्शित किया है। वह चाहता है, कि पाप से मुक्ति पाकर उसके स्वर्ग में रहने के योग्य बनने के लिये, हरएक इन्सान हर एक स्त्री और हरएक पुरुष, उसके पुत्र यीशु मसीह में यह विश्वास लाए कि वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र है, जो परमेश्वर की इच्छा से हमारे पापों के बदले में क्रूस पर मारा गया था। वह चाहता है, कि हर एक मनुष्य प्रत्येक बुराई और अज्ञानता की बातों से अपना मन फिराए। और वह चाहता है, कि ऐसा करके प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये जल में गाड़े जाकर यीशु मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा ले।

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि जहाँ कहीं भी जब लोग ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर मसीह के बलिदान के कारण उनके सब पापों को क्षमा कर देता है। और मसीह उन सब को अपनी कलीसिया में, यानी अपने उद्धार पाए हुए लोगों की मंडली में मिला लेता है। फिर परमेश्वर चाहता है, कि उसके उद्धार पाए

हुए वे लोग प्रति-दिन यीशु मसीह की आज्ञाओं पर चलकर उसके जीवन का अनुसरण करें। वैसा ही स्वभाव रखें जैसा मसीह यीशु का था। और जिस प्रकार परमेश्वर चाहता है वैसे ही उसकी आराधना-उपासना करके अपना जीवन इस जगत में बिताएं। जो लोग ऐसा करेंगे, परमेश्वर उनका सब पापों से उद्धार करके उन्हें स्वर्ग में हमेशा का जीवन देगा। यही परमेश्वर के प्रेम और उसकी सामर्थ का सुसमाचार है।

क्या आप परमेश्वर के वचन की इन बातों पर विश्वास करते है ? यदि आप ऐसा करेंगे, तो आप अपने आत्मिक जीवन को सुरक्षित कर लेंगे। प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले पर अन्त में अपनी आत्मा को हमेशा के लिये खो दे तो उसे क्या लाभ होगा ?

इन बातों के बारे में यदि आप और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, या इन्हें मानने के लिये हमारी सहायता लेना चाहते हैं, तो हमें अवश्य लिखकर सूचित करें।

आत्मिक दुर्घटना

बाइबल से एक बड़ी ही सुन्दर और महत्वपूर्ण बात हमें यह सीखने को मिलती है कि परमेश्वर ने स्वयं अपने बारे में और हमारे बारे में हमे बड़ी ही स्पष्टता से सब कुछ बता दिया है। लेकिन, बड़े ही अफ़सोस की बात यह है, कि आज संसार में अधिकांश लोग न तो परमेश्वर को वास्तव में जानते हैं, और न ही अपने लिये परमेश्वर की इच्छा के बारे मे जानते हैं। जबकि परमेश्वर केवल एक ही है। और सारे जगत के लोगों के लिए उसकी एक ही इच्छा है। पृथ्वी पर भांति-भांति के लोग हो सकते हैं। उनकी अलग-अलग भाषाएं हो सकती हैं। रीति-रिवाज़ और सभ्यताएं अलग-अलग हो सकती हैं। पर फिर भी उन सब को केवल एक ही परमेश्वर ने बनाया है। हम लोगों को उनके रंगों से, रूप से और उनकी भाषाओं से पहचानते हैं। लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में हम सब मनुष्य हैं। उसने आरभ्भ में पृथ्वी पर मनुष्य के केवल एक ही जोड़े को बनाया था, और उन्हें आशीष देकर उनसे कहा था कि तुम पृथ्वी पर सब जगह फैल जाओ। और आज ज़मीन पर पांच सौ करोड़ से भी अधिक लोग विद्यमान हैं। उनके अलग-अलग रंग-रूप हैं, अलग-अलग भाषाएं हैं, अलग-अलग सभ्यताएं हैं और अलग-अलग धर्म हैं। पर, फिर भी सच्चाई यही है कि हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है, और हम सब के लिए उसकी केवल एक ही इच्छा है। और परमेश्वर ने अपनी उस इच्छा को, अपने पवित्र आत्मा के प्रेरणा के द्वारा बाइबल में लिखवाकर सब मनुष्यों को दिया है। इसलिये, बाइबल के बारे में सबसे पहली बात हमें यह समझने की अवश्यकता है, कि बाइबल किसी एक "धर्म" की पुस्तक नहीं है। पर बाइबल वास्तव में परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। और इस पुस्तक में परमेश्वर का वचन अर्थात परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर सब लोगों के

लिये है। इसलिये, जब मैं आपको बाइबल में से बताता हूँ, तो मैं उन बातों को आपके सामने रखता हूँ, जिन्हें परमेश्वर आपको और सब लोगों को बताना चाहता है।

परमेश्वर के बारे में बाइबल हमें यह बताती है, कि परमेश्वर आत्मा है, जिसे हम किसी भी रूप-स्वरूप या मूरत या सूरत में नहीं ढाल सकते। वह सर्वशक्तिमान है, और सदा से है और सदा रहेगा। उसी ने सारे जगत की, आकाश और पृथ्वी की, सृष्टि की है। यानी जो कुछ भी हम आकाश में और आकाश के नीचे देखते हैं उन सब वस्तुओं का बनानेवाला परमेश्वर ही है। लेकिन इन सब वस्तुओं को परमेश्वर ने क्यों बनाया है ? बाइबल के अनुसार, आकाश और पृथ्वी पर जो कुछ भी है, इन सब वस्तुओं को परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये बनाया है। जैसे कि जब एक बच्चे का जन्म होता है, तो उसके संसार में आने से पहले ही उसके माता-पिता उसके लिये आवश्यक वस्तुओं का प्रबन्ध कर लेते है। ऐसे ही परमेश्वर ने भी मनुष्य को बनाने से पहले उसके प्रयोजन के लिये सारी वस्तुओं को पहले ही से बना दिया था।

एक जगह बाइबल में इस प्रकार लिखा हुआ है: "इस कारण अपनी बुद्धि की कमर बान्धकर और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रकट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है। और आज्ञाकारी बालकों के समान बनो, न कि अपने अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य बनो। पर जैसे कि तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूँ। और जब कि तुम "हे पिता" कहकर उस से प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार प्रेम करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है, उस से तुम्हारा छुटकारा चांदी-सोने अर्थात नाश्मान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और

निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ है। उस का ज्ञान तो जगत की उत्पत्ती के पहले ही से जाना गया था, पर अब इस अंतिम युग में तुम्हारे लिये प्रकट हुआ है। जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिस ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, और महिमा दी; कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो'' (१ पतरस १:१३–२१)।

इस से हम यह सीखते हैं; कि हमारा सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर निष्कलंक और पवित्र है। और वह चाहता है कि हम सब भी उसी के समान बनें। आरभ्भ में जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था तो वह एक छोटे बच्चे की तरह निष्कलंक और पवित्र था, क्योंकि बाइबल में लिखा है कि आरभ्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी ही समानता पर बनाया था। लेकिन परमेश्वर यह भी जानता था, कि मनुष्य में पाप करने की क्षमता है, और वह पाप कर सकता है। इसलिये परमेश्वर ने पहले ही से, मनुष्य की उत्पत्ती से भी पहले, मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलवाने के लिये एक योजना बना रखी थी। उसने अपने सामर्थी वचन को मनुष्यों के पापों के लिये कुर्बानी के मेम्ने के समान पहले ही से नियुक्त करके रखा हुआ था। और जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने वचन को एक मनुष्य के रूप में ज़मीन पर भेज दिया। उसी मनुष्य का नाम, परमेश्वर की इच्छा से, यीशु मसीह रखा गया था। यीशु का अर्थ है, उद्धार करने वाला, और मसीह का अर्थ है, पहले से नियुक्त किया हुआ।

पाप से उद्धार पाने की, मुक्ति और छुटकारा पाने की ज़रूरत हरएक इन्सान को है। क्योंकि पाप से छुटकारा पाकर ही हम पवित्र बन सकते हैं। और पवित्र बनकर ही हम स्वर्ग में परमेश्वर के पास जा सकते हैं। अपने कामों से या प्रयन्नों से हम अपने आपको पवित्र नहीं बना सकते। केवल परमेश्वर ही हमें पाप से छुटकारा दिलाकर पवित्र बना सकता है। इसीलिए उसने यीशु मसीह को अपने एकलौते

पुत्र के रूप में पृथ्वी पर भेजा था। उसी की इच्छा से उसे एक अपराधी के समान क्रूस के ऊपर लटकाकर मारा गया था। इसीलिए बाइबल में लिखा है कि हमारा छुटकारा जगत की नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हो सकता पर यीशु मसीह के उस लोहू के द्वारा होता है जो उसने क्रूस पर से सारे संसार के लोगों के लिये बहाया था।

लेकिन परमेश्वर के उद्धार को हम कैसे प्राप्त करते हैं ? यानि अपने पापों से हमें कब छुटकारा मिलता है ? बाइबल में लिखा है, कि जब हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, जिसे परमेश्वर ने हमारे पापों के बदले में बलिदान किया है। और जब हम अपने वर्तमान जीवन से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिये पानी में गाड़े जाकर बपतिस्मा लेते हैं, तो इस प्रकार, परमेश्वर की आज्ञा मानने के फलस्वरूप, हम अपने पापों से, यीशु मसीह के क्रूस पर से बहाए लोहू के द्वारा, छुटकारा पाते हैं। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)।

फिर हम बाइबल में इस प्रकार पढ़ते हैं: "यदि तुम ने अपराध करके घूंसे खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या बड़ाई की बात है ? पर यदि तुम भले काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। क्योंकि न तो उसने पाप किया, और न उसके मूंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (१ पतरस २: २०-२४)।

लेकिन जब कि परमेश्वर ने सारे जगत पर अपनी इच्छा को प्रकट कर दिया है। यानि उस ने बता दिया है, कि पृथ्वी पर सब लोग पाप के वश में हैं। और उस ने हमें पापों से छुटकारा दिलवाने के लिये क्या किया है। और हमें अपने-अपने पापों से छुटकारा पाकर पवित्र बनने के लिये क्या करना चाहिए। तौभी संसार में अधिकांश लोग परमेश्वर की बातों की तरफ कोई ध्यान नहीं देते। और अंत में इस का जो परिणाम होगा, वह एक बहुत विशाल "आत्मिक दुर्घटना" होगी।

अभी कुछ ही दिन पहले हमने एक समाचार पत्र में पढ़ा था कि किस प्रकार एक महिला ने अपनी बेटी के खाने पर गलती से ज़हर को काली मिर्च समझकर छिड़क दिया था, और उसकी बेटी की मृत्यु हो गई थी। उस परिवार के लिये यह एक बहुत बड़ी दुर्घटना थी। पर जो लोग आज परमेश्वर के वचन की बातों पर ध्यान न देकर गलती कर रहे हैं, उस गलती के परिणाम स्वरूप जो आत्मिक दुर्घटना न्याय के दिन होगी; उसका अनुमान हम किसी भी तरह से नहीं लगा सकते।

जो लोग परमेश्वर के वचन पर विश्वास लाकर उसे नहीं मानते उन्हें उस आत्मिक दुर्घटना का सामना एक दिन अवश्य ही करना पड़ेगा। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने सब मनुष्यों के लिये एक बार मरना और फिर उसके बाद न्याय का सामना करना नियुक्त किया है। (इब्रानियों ९:२७)। क्या आप ने परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास लाकर उसके सुसमाचार को मान लिया है ? यदि नहीं, तो मेरा आप से आग्रह है, कि ऐसा करने में देरी न करें।

बपतिस्मा और उद्धार

आज मैं आपके सामने इस बात को रखना चाहता हूँ कि पाप से छुटकारा प्राप्त करके, परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए यह बड़ा ही जरूरी है कि हर एक व्यक्ति क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह पर विश्वास लाए और पाप से अपना मन फिराकर जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा ले। क्योंकि मनुष्यों के उद्धार के लिए परमेश्वर की केवल यही एक योजना है, जिसे परमेश्वर ने अपने वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में प्रकट किया है।

बाइबल में, रोमियों नाम की पुस्तक के पांचवें अध्याय में, परमेश्वर का भक्त पौलुस लिखकर कहता है कि जब हम निर्बल थे, अर्थात, जब हम, यानि हम मनुष्य स्वयं अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए असमर्थ थे, तो मसीह परमेश्वर की इच्छा से संसार के सब अधर्मियों के लिए क्रूस पर मारा गया था। और इस प्रकार क्रूस पर मसीह को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को परमेश्वर ने दे दिया था जिसके द्वारा परमेश्वर ने संसार पर अपने विशाल प्रेम को प्रदर्शित किया था।

पाप ने, आरम्भ में आदम और हव्वा के द्वारा जगत में प्रवेश किया था, और पाप के फलस्वरूप आत्मिक मृत्यु ने जगत में प्रवेश किया था यानि आदम और हव्वा अपने पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गए थे। अर्थात्, वह आत्मिक और अनन्त जीवन जो परमेश्वर के साथ उन्हें हासिल था जिसके वे परमेश्वर की संतान होने के कारण हकदार थे उस स्वर्गीय जीवन से वे वंचित हो गए थे। आत्मिक और अमर तो वे अभी भी थे–जिस प्रकार से हम सब हैं। यानि हम शारीरिक भी हैं और आत्मिक भी हैं। हमारा शरीर जबकि भूमि की मिट्टि की समानता पर बना है, दूसरी ओर, हमारी आत्मा परमेश्वर का अमर स्वरूप है। आत्मिक होने के कारण, हमारा

व्यक्तित्व कभी नष्ट हो ही नहीं सकता। पर, हम सब ने पाप किया है। हम सब परमेश्वर की दृष्टि में और उसके लेखे में पापी हैं। हम पापी इसलिये नहीं है क्योंकि हम आदम और हव्वा की संतान हैं। पर हम सब पापी इसलिए हैं, क्योंकि हम सबने आदम और हव्वा की ही तरह से परमेश्वर की आज्ञा पर न चलकर स्वयं पाप किया है। और पाप की मजदूरी, यानि पाप का फल मृत्यु है – आत्मिक मृत्यु–अर्थात परमेश्वर से अलग होकर रहना। शारीरिक मृत्यु के द्वारा हम अपने शरीर से अलग हो सकते हैं। पर हमारी आत्मा का अस्तित्व ख़त्म नहीं होगा। परलोक में हम हमेशा ज़िन्दा रहेंगे। लेकिन क्योंकि मनुष्य पापी है, इसलिये वह स्वर्ग में जाकर अनन्त जीवन के लिये नहीं रहेगा। मनुष्य को, उसके पाप के कारण नरक में अनन्त जीवन मिलेगा। स्वर्ग और नरक में केवल यही अन्तर है, कि स्वर्ग में परमेश्वर है, और नरक में परमेश्वर नहीं है। दूसरी ओर, जैसे स्वर्ग अनन्त है, वैसे ही नरक भी अनन्त है। और जैसे स्वर्ग एक आत्मिक स्थान है, वैसे ही नरक भी एक आत्मिक स्थान है !

और, अब मैं आप के सामने बाइबल में से रोमियों की पुस्तक के पांच और छः अध्याय में से पढ़ने जा रहा हूँ, जहाँ इस प्रकार लिखा है: कि "इसलिये जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, असलिये कि सब ने पाप किया। क्योंकि व्यवस्था के दिये जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ पाप गिना नहीं जाता। तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम के अपराध की तरह जो उस आनेवाले का चिन्ह था पाप नहीं किया था। पर जैसे अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के बरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुतेरे लोगों पर अधिकाई से हुआ। और जैसे एक मनुष्य के पाप करने का फल

हुआ, वैसे ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण दन्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु बहुतेरे अपराधों से ऐसा बरदान उत्पन्न हुआ, कि लोग धर्मी ठहरें। क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी बरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। इसलिये जैसे एक अपनाध सब मनुष्यों के लिये दन्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसे ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसे एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। और व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ। कि जैसे पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसे ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।

"सो हम क्या कहें ? क्या हम पाप करते रहें ताकि अनुग्रह बहुत हो ? कदापि नहीं ! क्योंकि हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं ? क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उस के साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ कूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया वह पाप से छूटकर धर्मि ठहरा। सो यदि हम मसीह के साथ मर चुके हैं, तो

हमारा विश्वास यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी। क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं हो सकती। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने-अपने को पाप के लिये तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।

"इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो। और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौपों, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौपों, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो। तो तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बल्कि अनुग्रह के आधीन हो।

"तो क्या हुआ ? क्या हम इसलिये पाप करें, कि व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हैं ? कदापि नहीं। क्या तुम नहीं जानते की जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो जाते हो : और जिसकी मानते हो, चाहे पाप की, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने की, जिसका अन्त धार्मिकता है ? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए जिसके सांचे में ढाले गए थे और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।'' (रोमियों ५:१२ से ६:१८ तक)।

पाप से छुटकारा पाकर धर्मी बनने के लिये, उन्होंने उस उपदेश को माना था और उसके सांचे में ढ़ाले गए थे जो उन्हें सुनाया गया था; अर्थात् यह, कि मसीह परमेश्वर की इच्छा से पापियों के लिये मर गया था, और गाड़ा गया था, और जी उठा था ! इस उपदेश को उन्होंने कैसे माना था ? उन्होंने मसीह में विश्वास करके पाप से मन फिराया था और बपतिस्मा लेकर जल में

गाड़े गए थे, और उसमें से बाहर आए थे, एक नए जीवन की चाल चलने के लिये !

क्या आप भी परमेश्वर के सुसमाचार के उपदेश को सुनकर अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं ? अगर हां ! तो मसीह में विश्वास करके और प्रत्येक बुराई से अपना मन फिराकर जल में गाड़े जाकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लीजिए।

यदि इन बातों के बारे में हम आपकी कोई सहायता कर सक्ते हैं, तो हमें ज़रूर लिखकर बताईए।

अन्त में

सभी बातों का निचोड़ यह है : कि प्रत्येक मनुष्य को पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए :

१. परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह में यह विश्वास लाना चाहिए कि वह परमेश्वर की इच्छा से हरएक व्यक्ति के लिए पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था।

२. हरएक बुराई से मन फिराना चाहिए।

३. अपने पापों की क्षमा पाने के लिए, पाप से मुक्त होने के लिए जल के भीतर गाड़े जाकर बपतिस्मा लेना चाहिए।

४. प्रति-दिन का जीवन प्रभु यीशु मसीह के आदर्शों पर चलकर–जैसे कि बाइबल के नए नियम में हम पढ़ते हैं–व्यतीत करना चाहिए।